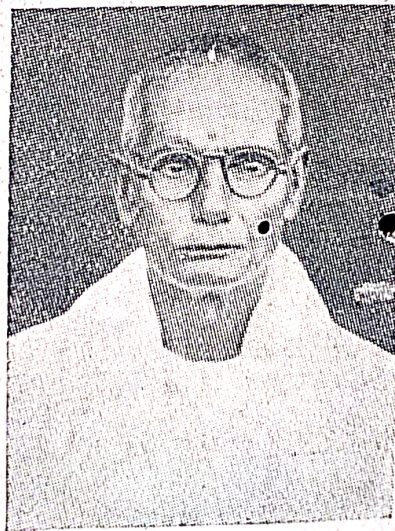


वैदेही

मैथिली क सर्वोत्तम मासिक



एकांकी

परिशिष्टांक

एक प्रत
मासिक

(=) काथवा ३५
जनवरी १९५९

Vaidehi 37 nP.
January 1959

संस्थापकक प्रेरणा : इन्द्रकान्तमिश्र (कुमार)

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'श्रीसुधांशु 'शेखर'
चौधरीप्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २७

विशेषांक ७५

वार्षिक ४)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

सूची

एकांकी विशेषांक परिशिष्टांक

श्रीजीवनाथभा

दुर्गा विजय

५

श्रीराजकमलचौधरी

महाकवि विद्यापति

३२

स्तम्भ

समाचार-संकलन

४

मुख-चित्र : मैथिलीक अनन्य भक्त एवं वयोवृद्ध साहित्यकार पूर्णिमाँ जिला-
निवासी पण्डित श्रीशिवानन्दचौधरी ।

विज्ञप्ति

प्रकाशनक सभ सामग्रीमे (विशेषतः कागतक दाममे) प्रत्यधिक वृद्धि
हैबाक कारणे 'वैदेही' क वार्षिक चन्दा ३) टाकासँ ४) टाका जनवरी १९५६
सँ भ' गेल अछि । तदनुसार एक प्रतिक दाम आब १२) आना भ' ।संगहि पृष्ठसंख्यामे सेहो—५ फर्मासँ ६ फर्मा—वृद्धि कैल अछि ।
कृपालु ग्राहक सभ अपन नवीन वर्षक चन्दा एहि अनुसार पठात ।

—मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

समाचार—संकलन

—महाराजाधिराज डा० सरश्रीकामेश्वरसिंहजी द्वारा अखिल भारतीय मैथिल महासभाक लहेरियासराय मध्य नवनिर्मित 'महासभा भवन'क उद्घाटन भेल अछि ।

—डा० श्रीजयकान्तमिश्र एम. ए., डि. फिल., प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग, अखिल भारतीय लेखक संघ (P. E. N. Bombay)क जनवरी मध्य उड़ोसामे आयोजित अधिवेशनमे मैथिलीक दिसिसँ प्रतिनिधित्व करै लेल आमन्त्रित भेल छथि ।

—अखिल भारतीय मिथिला लोक संघ द्वारा आयोजित विद्यापति-जयन्ती-समारोह मध्य प्रसिद्ध बंगालीक विद्वान् डा० श्रीकालिदास नाग घोषणा कैलन्हि जे महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोरक रचनामे विद्यापति ठाकुरक अपूर्व प्रभाव अछि । समारोहक अध्यक्षता पटना हाइकोर्टक जस्टिसश्रीसतीशचन्द्र मिश्र कैने छलाह ।

—विद्यापति परिषद्, पटना द्वारा आयोजित विद्यापति-पर्व-उत्सवमे कुमार श्रीगंगानन्दसिंह, शिक्षा - मंत्री, बिहार सरकार बजलाह जे विद्यापतिक जन्मस्थान बिसफी मध्य द्वितीय पंचवर्षीय योजनाक समाप्तिसँ पूर्व बिहार सरकार 'विद्यापति—स्मारक'क कार्य—सम्पादन कै लेत ।

—चेतना समिति, पटना द्वारा विद्यापतिक स्मृतिमे 'विद्यापति-भवन' पटनामे निर्माण करबाक योजना प्रस्तुत अछि ।

—बाबू श्रीचन्द्रधारीसिंह, राँटी ड्योढ़ी (दरभंगा) लहेरियासराय मध्य मिथिला सांस्कृतिक गोष्ठीक उद्घाटन विधिवत् गत मास कैलन्हि । एहिमे मनोविनोद, भाषण, कविसम्मेलन आदि सप्ताहिक रुचिक समावेश अछि ।

—वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय गोत - गोविन्दक सचित्र ग्रन्थ प्रकाशनक विचार कै रहल अछि ।

—हरिपुरवासी श्रीपरमेश्वरमिश्र, एम. ए. पटनाविश्वविद्यालय मध्य मैथिली गद्यक विकास पर पी. एच्. डी.क थोसिस पर कार्य कै रहल छथि ।

—मिथिला कालेज, दरभंगाक मैथिली साहित्य परिषद्क एक गोठ विशिष्ट अधिवेशन मध्य एडितश्रीआदित्यनाथभा, आइ. सी. एस., कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी आमन्त्रित कैल गेल छथि ।

—आचार्यश्रीगोविन्दभाक 'बसात' (नाटक), प्रो० श्रीदुर्गानाथभा 'श्रीश' द्वारा सम्पादित 'भुवन' - भारती (भुवनजीक कविता - संकलन), श्रीदीनानाथभा द्वारा अनुदित रसेलस (उपन्यास) प्रकाशित भै गेल अछि । मुन्शी रघुनन्दन एक 'सुभद्रा - हरण' महाकाव्यक सत्रहम सर्ग धरि प्रकाशन भै गेल अछि ।

दुर्गाविजय नाटक

पण्डितश्रीजीवनाथभा

आमुख

मार्कण्डेय पुराणस्थ दुर्गा सप्तशतीक पाँचम अध्यायसँ एगारहम अध्याय धरिक कथांश लय ई नाटक रचित अछि । एहिमे दुइ अङ्क अछि । पहिलमे चारि दृश्य तथा दोसरमे पाँच जाहिमे दोसर दृश्य प्रहसनात्मक थिक ।

असुरराज शुम्भ देवलोककेँ जीति विश्वभरिमे अपन अधिकार जमा लेलक । भयसँ इन्द्रादि सकल देवता भागि जङ्गलमे नुका रहलाह । शुम्भ मदमत्त भय धार्मिक सर्वस्व वेदक पोथीकेँ जरबाबए लागल, गोवंशक वध करबाबए लागल एवं देवताक स्थानमे शुम्भ-शुम्भ जपबाक, पूजा-पाठ, यज्ञ आदि नहि करबाक, कण्ठी-चानन नहि रखबाक आज्ञा जारी कय ऋषि-मुनि तथा देवताकेँ ताकि - ताकि मारबाक प्रतिज्ञा कयलक । धर्मक स्थानमे पाप व्याप्त भय गेल । ब्राहि-त्राहि मचि गेल । विश्व संकटमे पड़ि गेल तखन इन्द्रादि देवता मिलि महादेवक ओतय जाय हुनक विचारानुसार जगज्जननी आदि-शक्ति (वैष्णवी शक्ति) दुर्गाक सामूहिक स्तुति कएलन्हि, दुर्गा प्रकट भेलीह । असुरक वधक प्रतिज्ञा कयलैन्हि मोहिनी रूप बनि असुरक ध्यान केन्द्रित कय युद्ध करए लगलीह, असुरराज ससैन्य मारल गेल, धर्मक विजय भेल । दुर्गा इन्द्रकेँ पुनः त्रिभुवनक राज्य सिंहासनपर बैसओल । धार्मिक शासन कायम भेल ई कथा अछि ।

द्वितीय अङ्कक दोसर दृश्यमे एक लघु हास्यकथा सेहो देल गेल अछि । एहिमे आधुनिक ढङ्ग पर रङ्गमञ्चोपयुक्त बनबाक पूर्ण प्रयास कयल गेल अछि विस्तारक भयसँ प्रस्तावना, विष्कम्भक आदिक समावेश कइ अछि । एहिमे एक विशेषता सकल गद्यमे अनुप्रास योजनाक एवम् उक्ति-प्रत्ययक लघुताक सेहो अछि ।

एहि रचनाक आधार थिक दुराचारीक परिणाममे सुदेशा अथवा सदाचारीक विजय देखाएब । अङ्गी वीर रस; अङ्गभूत हास्य, कथुण, रौद्र, भयानक, शृङ्गार । सकल साधारण व्यक्तिअहुकेँ नीक जेकाँ बोध । एहि तात्पर्येँ एकरा अत्यन्त सरल तथा रोचक शब्देँ लिखबाक यत्न कएल गेल अछि ।

पात्र परिचय

पुरुष-पात्र

शुम्भ
रक्तवीज
निशुम्भ
वामदेव
शिष्य
साधु
धूम्रलोचन
दुर्धर
दुर्मुख
इन्द्र
विष्णु
ब्रह्मा
महादेव
चण्ड, मुण्ड

दैत्यराज
सेनापति
युवराज
मुनि
मुनिक शिष्य
एक बाबाजी
योद्धा (दलपति)
एक असुर
एक असुर
देवराज
भगवान्
विधाता
शिव
योद्धा (दुइ भाइ)

स्त्री-पात्र

दुर्गा
महाकाली प्रभृति

भगवती काली
भगवती काली

प्रहसन-पात्र

मर्ग
रहित भा
कन ठाकुर
सोनफी बाबू

वैदिक
विद्यार्थी
फेकनक बाप

मनू

वक

प्रथम अङ्क

दृश्य १

(मङ्गल गीत)

जननि जय - जय कालिके !

पद सरोरुह-प्रणत-विधिहरि प्रभृति—सुरवर मालिके !

सदय हृदया अतिकराला

आदिशक्ति तथापि बाला

छी अहाँ, निजजन - निहितमन - कलुषकुलप्रक्षालिके !

सुर असुरमे अधिक सबला

तदपि छी कहबैत अबला

एक मात्र, तथापि त्रिभुवन - सृष्टिक्रम—सञ्चालिके !

त्रिभुवनक छी आदिकारण

कय महाशक्तिक सुधारण

देवतहुसँ बध्य नहि जे तेहि असुर दल घालिके !

(दृश्य : शुम्भक दरवार)

शुम्भ—तीनलोकमे सभसँ पैघ हम छी शक्तिमे अनुपम छी—(तरुआरि स्त्रीचि) हमर एहि तरुआरिक डरेँ मनुष्य पशुक कोन बात यत्न किन्नर गन्धर्व आदि सेहो थर-थर कपैछ आ हमर नाम जपैछ ततबए नहि राक्षसक कोन बात देवतालोकनि सेहो हमर अधीन स्वीकार कयलैन्हि, आज्ञाक अनुसार धयलैन्हि । (गम्भीर स्वरसँ) आब केवल विष्णु लोकक विजय अवशिष्ट अछि जे हमरा लेखैँ अकिञ्च अछि । (रक्तबीज दिसताकि) सेनापति ! कहू संसारमे केओ विष्णुक नाम त ने जपैछ ? हमर आज्ञा त ने टपैछ ?

रक्तबीज—महाराज ! श्रीमान्क आज्ञा पाबि यशोगानरक सब लोकमे निर्देश पत्र छिटबाय देलियैँ आ डिगडिगिया पिटबाय देलि—जे केओ आइसँ कोनोठाम देवताक नाम जपत से जानसँ खपत ताहि पर सब डेराय-गेल देवताक घमण्ड हेराय गेल केवल इन्द्र किछु काल युद्धरत भेल । किन्तु अन्तमे ओहो गद्दी छोड़ि भागि गेलाह । असुरकेँ इन्द्र बनाल जैक । विजय-पताका फहरा देलियैँक ।

शुम्भ—(हँसत) बाह-बाह । खूब कयल, बाँरोचित पथ धयल । (दारु
पिबैत) आ' दाढ़ीबला बाबाजी, आव ककर ध्यान लगवैये ? कोन भाव
जगवैये ?

रक्तबीज—महाराज ! बदमसबा बाबाजी तँ भयभीत भेल पढ़ाय गेल ।
ओकर चेला सभकेँ खेला कय पकड़ि लेलियैक आ खाय गेलियैक आ खाय
गेलियैक (ढेकार करैत) खूब जचल, ह ह ई आव पचल से देखि कय बहुत गोठय
आव 'शुम्भ-शुम्भ' जपब स्वीकार कयलक । असुरक अनुगमन पथ धयलक ।

शुम्भ—(हँसैत) दिक्पालो लोकनि जखन भारी आज्ञाकारी बनलाह ।
रुढ़िवादक सिन्धु फनलाह तखन आव विष्णुकेँ पकड़ि फन्दमे जकड़ि जहल-
खानामे बन्द कय दी सएह उचित ताहीमे दैत्यक हित (किछु सोचि) बेस !
निशुम्भकेँ आवय दियैन्ह, विचार लावय दियैन्ह ।

निशुम्भ—(एकाएक आबि) विजय, विजय, विजय !!! महाराज शुम्भक
विजय हो (मोछपर ताओ दैत) महाराज ! आव विश्वमे केओ अपनेक
साक्षात् विरोधकारक, आज्ञाक वारक नहि अछि । प्रभो ! आइ हमर सैन्य
लाखो गायकेँ काटि दाढ़ीबाला बाबाजीक आश्रमकेँ रखि देलकैक आ ओकर
प्रभावकेँ उचड़ि लेलकैक । (हँसैत) सभ हुकुम मानि लेलक अपनेक सर्वो-
परि बल जानि लेलक । तखन हम विष्णुकेँ खिहारल मुदा ओ मारल मुड़िया
अदृश्यता धारल ।

शुम्भ—(हँसैत) बाह, बाह, आव की थिक ओ की खाएत कतए जाएत
समुद्रमे, पातालमे, आकाशमे, स्वर्गमे, पहाड़ी गुहाक सोभमे, जङ्गलक भोभमे
सभठाम मूड़िमुड़िया मूड़ि विना पकड़ने नहि छोड़वैन्ह आ बाहि जहलमे
गोड़वैन्ह । (दारु सभकेँ दैत) सेनापति ! एहि विजयक उपलक्षमे गान-बजान
होअओ ।

रक्तबीज—आ आज्ञा (गवैयाकेँ बजबाय आज्ञा दैछ)
(गवैया गीत गवैछ)
(गजल)

ओ गोर असल गिरिराजहुसँ ढाहीमे जे पाछाँ न हटय ।
नहु प्रहार दिव्यास्त्रहुसँ अतिप्रबल जकर नहि अङ्ग कटय ॥

एकाकी रहि समरस्थलमे उरमे न भीति लाबय कनियो,
 दौड़ैत अपन बचवैत जकर असिधार सकल रिपुकण्ठ सटय ।
 द्वेषिक प्रयासकेँ व्यर्थ करए सब 'जीव' देखि आश्चर्यित हो,
 राखए कौशल जहिसँ शत्रुक रक्तक सरितासँ भूमि पटय ।
 ओ वीर असल...

शुम्भ—(पुनः पुनः दारु पिबैत विकृत स्वरे) युवराज ! आइ पहिने
 आवश्यक अछि गाय, बाभन, वेद, मन्दिर एहि सभक नाश तखनहि विष्णुक
 शक्तिक हास होयतैक एहि प्रसङ्ग कोन - कोन काज भए चुकल अछि आओर
 कोन-कोन काज भए रुकल अछि ?

निशुम्भ—महाराज ! वेदक पोथी तँ लूटि लेलियैक बाबाजी सभकेँ
 कूटि देलियैक । वेदक ढेर एहीबेर जराओल जाएत । विजयपताका फहराओल
 जाएत । (धूम्रलोचन दिस ताकि) लाबह, जलदी आगि लगाबह ।

(वेदक पोथी जरैत अछि)

शुम्भ—(बिहुँसी दैत)

देवगणक भय गेल ई स्तुतिक खजाना ध्वस्त ।

कौशल सभहिक भेलई सभ दिन हेतुक अस्त ॥

निशुम्भ—(वेगसँ) श्रोमन् ! सुनल जाइत अछि घोल ? बाभने सभक
 थिकैक ई करुण बोल । (खुशी होइत) दड़ियल सभकेँ छानि पकड़िकेँ आनि
 जहलक महलमे रोकैत छैन्ह । लाठी-फराठोसँ ठोकैत छैन्ह । सरकार ! आब
 दोसर कोन विचार, केवल ताको पापो दुष्ट विष्णुक गीत । पड़ि लगाबी दश
 लात, आ करी पीठपर घात ।

शुम्भ—बस बस, ठीक बात (रक्तबीज दिस) चीरु दिशामे सैन्य पठाउ ।
 पता लगाउ दुष्ट कतए गुप्त अछि ? कोना लुप्त अछि ?

रक्तबीज—बहुत वेस, जे आदेश ।

निशुम्भ—(विकृतस्वरे) बाह, बाह ! खूब-खूब फेर-फेर एकट्ठा गीत
 गा गा.....

शुम्भ—सावधान ! राखू दैत्यक मान ।

आब नहि होअओ गान वजान
 छोड़ि दे एखन कुबुद्धिक ध्यान

राख पड़िने दैत्यक सम्मान
ताक दैत्यक द्वेषी भगवान
ढाह जलदी दैत्यारि—गुमान
बढ़ा असुरक दिनदिन अभिमान

(मदमत्तक चेष्टा करैछ)

निशुम्भ—(ऊठि) महाराज शुम्भक जय हो (सेनापतिसँ) सेनापति !
चलू चलू धरू पकड़ू ।

(सभ जाइत छथि)

दृश्य २

(तपोवनमे मुनिक कुटी)

वामदेव—(चिन्तित भय) आव कतए पड़ाएकेँ जाउ ? कोन युक्ति लाउ ?
ककर शरण धरू ? की करू ? किछु फुरबे ने करैत अछि । आव हृदय अधैर्य
धरैत अछि । हा दैव ? भागिकेँ हिमालयकात आएल छी खोहमे नुकाएल छी ।
किन्तु एतहु गीध जेकाँ मड़राइत शुम्भ-निशुम्भ आदि आवि रहल अछि
हमरासभकेँ गिड़वाक हेतु मूह बाबि रहल अछि । कोना सहू ककरा कहू ?
विष्णुक मन्त्र नहि जपब । आर्य-सिद्धान्तकेँ टपब थिक । धर्म-युद्ध कोना
लड़ी ? की करी ?

शिष्य—गुरुदेव ! हमरा लोकनिक आराध्यदेव दिकूपालो लोकनि जखन
अपन स्थान छोड़ि भागि रहल छथि चिन्तासँ भरि राति जागि रहल छथि इन्द्रक
वज्र, वरुणक पाश, कुबेरक गदा, ओ यमक दण्डपर देवलोकनिकेँ प्रचण्ड
घमण्ड छलैन्ह सेहो शुम्भ-निशुम्भक आगाँ छुछ बनि गेल ततबए नहि
विष्णुक सुदर्शन चक्रो तुच्छ साबित भेल । सर्वशक्तिमान् विष्णुभगवान् स्वयं
भयसँ कतहु छपल छथि ? की शक्ति सम्प्रति खपल नहि छथि ? तखन हमरा
सभक आघातक कोन बात ?

इतए

(नेपथ्यमे भागू भागू)

(शिष्यसुनि थर-थर कपैत) गुरुदेव ! अनर्थ भयगेल !!! सर्वस्व खतम
भेल !!! रक्तबीज ब्राह्मण आगायकेँ मारि रहल अछि । वेद समेत पोथी-
पतङ्गहारि रहल अछि । (चिन्तितभय) आव की करब ? कतए टरब ?

सुभमदेव—(मन्दस्वरेँ) चुप-चुप सभहि गोटय चुपचाप आउ । एहि खोहमे
३ । भक्तिसँ परमेश्वरक नाम जपू । व्यर्थ नहि कपू ओ कोनो प्रतीकार

अवश्य करताह, कोनो ने कोनो उपाय अवश्य धरताह, कारण परमेश्वर सर्व शक्तिमान छथि । करुणानिधान छथि एखन कोनो कुसमय आबि गेल अछि जे आर्यक भाग्यकेँ दाबि देल अछि तेँ ओ रक्षा नहि कय रहल छथि । प्रकट नहि भय रहल छथि किछु भावी छैक तकरे ई ताल थिक हुनके मायाजाल थिक ।

(सभ खोहमे नुकाइत छथि)

(एक साधुकेँ कोढ़रासँ पीटैत रक्तबीजक प्रवेश)

रक्तबीज—कह तोरा एखन के बचा सकैत छौ ? आ हमरासँ युद्ध मचा सकैत छौ ? (ठोंठिअबैत) मारते मारते खून कय देबौक एहि वनकेँ सून कय देबौक नहि त जप 'शुम्भ-शुम्भ' 'शुम्भ-शुम्भ' मूहमे रामनामक लगा ताला, तोड़ कण्ठक माला । (माला तौड़ैछ) मेटा चानन, देखा आनन । दड़ियल बाबाजी सभ कहाँ बौआइत छौ ? कहाँ नुकाइत छौ ?

साधु—(हाथ जोड़ि) श्रीमन् ! हमर कोन दोष ? कोन बातपर एहन रोष ? अपने एहि वनक शासक छी । दुष्टजनक नाशक छी, क्षमा हो, विष्णु भगवान् त सर्वशक्तिमान् छथि । हुनक नाम कोना छोड़ू, परलोकक मार्ग कोना मोड़ू दया, दया ।

(रक्तबीज पीटैत घिसिअबैत छैक । साधु आर्तनाद करैछ)

निशुम्भ—(आबि) ई ओना नहि जानत । ई तखन मानत जखन कोढ़राक तड़ातड़ सटका देबैक आ बान्हिके गाछ पर लटका देबैक ।

(रक्तबीज ओहिना करैछ)

(नेपथ्यमे क्रन्दन कोलाहल)

धूम्रलोचन—हाः हाः हाः—(हँसैत) जे हम चाहैत छलहुँ से भएगेल हमर भुजा उन्नत भेल । यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, ऋषि, मुनिक संग सकलदेव हमरासँ हारि मानि लेलक अपन-अपन पद छोड़ि देलक । आव केओ देवताक नाम नहि लैताअछि, दैत्यकडरेँ कपैत अछि । सकल वेदकेँ डाँटेन संसारसँ देवताक नाम साहि देल । लाखो गाय रोज मारैत छी ताकि-ताकि वाँक कुटी जारैत छी । दड़ियल सभ जे वेदान्त छटै छल, आनन्दक लहू वटै छल तकर दाढ़ी-मोछ उखाड़ि लेलियैक । पोथी-पतड़ा फाड़ि देलियैक । हाः हाः हाः... नाओपर गाड़ी-गाड़ीपर नाओ सभ दिन बाभनेक हुकूम कोना चलायै ? ओकरे घरमे सभ दिन दीआ कोना जलौक ?

(घमंडसँ हाथ उठाय) आव जकरा सामर्थ्य रहैक, बहराओ नै । पुरुषक आगाँ बापक बिआह आ पितियाक सगाइ देखा देवैक, मजा चखा देवैक (मोछ पर ताओ दैत) विजय; विजय.....

रक्तबीज—ककरासँ विजय पओलेहै, रओ धूम्रलोचना ।

धूम्रलोचन—विश्वसँ असुरक विजय भयगेल, आव के हमरासँ अड़त आ लड़त ?

रक्तबीज—(हँसैत) लोचना ! सून, एखन पूरा विजय नहि भेलौक, यावत् धरि विष्णुकेँ पकड़ि जहलमे नहि दुकओलियैन्ह, कुक्कुर जेकाँ नहि भुकओलियैन्ह अछि तावत् की जय-विजय ? किन्तु महाराज शुम्भ ओकरहि ताकि रहल छथि । चारु कात दूत हाकि रहल छथि । चल, चल आलस्य भगा, पौरुष जगा, पता लगा । चल, चल...।

(दुहूक प्रस्थान)

दृश्य ३

(दूइ बटोही)

दुर्धर—(प्रवेश कय) मिता ! कतसँ अवै छैँ रओ ! मूह कियेक बवैछैँ रओ ! बैस, बैस कनियेँ एक-दू घैल दारु छाकि ले आ दूएक छिट्टा फुटहा फाँकि ले !!! (ओहिना करैछ)

दुर्मुख—आ तौँ कत चललेहैँ रओ ! पहिने से त कह कनिये । बाज छौ केहेन काज ?

दुर्धर—पहिने जीह की दाँत ? गहूम, की जाँत ?

दुर्मुख—(हँसैत) हमरा तँ जीह दाँत एके बेर निकलल रहे, देख ने (दाँत देखवैत छैक)

दुर्धर—(रु पिबैत, फुटहा फकैत) तौँ कविकाठो छैँ, जतेक हुरै छौ ततेक फुरै छौ कह ।

दुर्मुख—नै मानवेँ, सुनवे करवेँ । बेस सुन । आइ शुम्भ महाराजक दरवारमे खूम तमाशा होइछै, रातिमे बड़का भोज हेतै तै ले चण्ड-मुण्डकेँ चीठी दकेँ दइ छौ । एक लाख गाइकेँ मोरैतक । चरमकूट हेतै, खूम मजाक ल सु ।

दुर्धर—(चिन्तित होइत) बापरे बा !!! जुलुम हेतौ सभक जान जेतौ रओ मित्ता ?

दुर्मुख—दुर्बुड़ि गदहा, रओ तोरा डर होइ छौ ? देवताक नामे जर होइ छौ ? सभ देवता हारि गेलैक, भागि गेलैक से खबरि नहि छौ ?

दुर्धर—(तमसा कय) चुप् अभगला ! तों उल्लू छेँ आगि-पाति किछु ने जनै छेँ । रओ ब्रह्मा, विष्णु आ महादेव ऐ तोनूकेँ के जीत सकै छौ ? पहिलुका कथा-पिहानी नै बुझल छौ ? हिरण्यकशिपुकेँ कोन दशा भेलै ? रावणक गर्व कत गेलैक । देवतासँ राच्छस ने कहियो जितलकौ ने जिततौ । एखन देवता सभ पड़ा गेल छौ तेँ की ? मानि जो जानि जो ओसभ कोनो ने कोनो प्रपञ्च रचैत हेतौ । अन्तमे जीति लेतौ, सभ राच्छसकेँ मारि देतौ, जारि देतौ । आव जान बाँचव कठिन छौ, रओ अलच्छा !

दुर्मुख—(मन्द स्वरे) चुप रह, चुप रह । कोनो सुपाही सुनतौ त पकड़ि लेतौ । जुतिया देतौ, खाल खींचि लेतौ ।

दुर्धर—सुन, जँ जान बचेबाक छौ तँ पड़ा । एकर राजसँ चल । हिमालय कात, दोसर कोन बात ? नहि तँ जान नहि बचतौ, बुझलेँ की ??? हमसभ त आइये राति हसुआ हेरेबौ परेबौ ।

दुर्मुख—(विचारि) रओ मित्ता ! बात त तोँ ठीक कहै छेँ । वस्तुतः अपन जातिक पच्छपात सभ करैये, से नहि कय मौगीजेकाँ पड़ा जाएव उचित हेतौ ? हित हेतौ ? कह...

दुर्धर—सुन जातिक पच्छ धरब नीक अवस्स मुक धर्म अधर्म, उचित-अनुचित, सम्भव-असम्भव एहू सभपर विचार करब आवस्सक छैक । कोनो धर्म हो निरपराध व्यक्तिक ऊपर प्रहार करब पाी थिक । जे माता जेकाँ दूध दैत अछि ताहि गायक हत्या करब पापे थिक, जे सतत परमेश्वरक ध्यानमे लीन रहैत छथि, जंगलमे दीन रहैत छथि ताहि ऋषिमुनिक हत्या भक्तिभाव हँटायव असम्भवे थिक । दोसर बात ई जे अन्यायीक राजमे बसब कोनो दृष्टिसँ ठीक नहि । स्वार्थी राजाक ने आगाँ चली ने पाछाँ, कारण ओ अनैक मर्यादा पर सतत कुठाराघाते करैत रहबाक चेष्टामे रहैछ । चारिम बात ई कएत जान बचायव सभसँ मुख्य काज थिकैक । हमरालोकनिकेँ विश्वास अछि जे गण एकरा पर ततेक जोरसँ प्रहार करए लगथिन्ह जे एकर सर्वनाश अवस्स

जएतैक सङ्ग सङ्ग जे एकर पक्ष रहतैक तकरो आ जे एकर विपक्षमे रहत तकरो तँ इएह मारि देतै फलतः हमरालोकनि दुइ तरहे मारल जाएव तँ पड़ा जाएव सएह नीक ।

दुर्मुख—बेस कहले तोँ, हमहू जाइतछी अपना लोकसभसँ गुप्त विचार करै ले ।

(दुहक प्रस्थान)

दृश्य ४

(हिमालयक खोहमे भयभीत इन्द्रादि देवता)

इन्द्र—(चिन्तित होइत) शुभ-निशुभक अद्भुत बलसँ तथा छलसँ हमरालोकनि हारि गेलछी अपन शक्तिकेँ टारि गेलछी । ओकरा दबएवाक कोनो प्रतीकार नहि फुरैत अछि, देवताक साम्राज्य बुड़ैत अछि । आव की करो, कोन युक्ति धरो । शरणापन्न होयव तँ लाज थीक, कदापि नहि पुरुषक काज थीक । तखन कोन विचार ? कोन आधार ?

विष्णु—देवराज ! हमरा विचारेँ सभहि गोटय शंकर निवास कैलास चलू । ओ महेश्वर थिकाह, सर्व शक्तिधर थिकाह ! कोनो प्रतिकार कहवे करताह, कृपा गहवे करताह । ई अशिष्ट व्यवहार हुनका इष्ट नहियेँ होयतैन्ह । हेतु जे एहि देवासुर-संग्रामकेँ आर्य-अनार्य, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, ओ प्रकाश-अन्धकारक युद्ध कहो तँ अत्युक्ति नहि तँ हुनक शरण जाय अन्तिम उपाय अवश्य कर्तव्य ।

ब्रह्मा—सुन्दर विचार !!! आवश्यक परिहार !!! चलै चलू कैलास आव दोसर कोन प्रकाश ?

(सभक प्रस्थान)

कह दृश्य—कैलासमे अदृश्य ध्यानस्थ महादेव]

सकल देव—

(स्तुति-गीत)

हे परमेश्वर ! करुणाधायक !

सु सुखगण हम अपनेक शरणमे आगत छी अधिनायक !

विनु अपनेक दया नहि बाँचब, आदि-अन्त परिचायक !

असुरक भयसँ भीत सकल हम सहित देवगण नायक !
 दोसर के अपनेक विना मम रक्तक होएत कायक !
 एकमात्र अपनेक आश अछि, नाशित-कौसुमसायक !
 वाम अङ्गमे आदि शक्ति छथि सुत विघ्नारि-विनायक
 वेद पुराण सकल तव निशदिन गुणगणगौरव - गायक
 जीवनाथ सबविश्वक अपने रक्तक बनू अपायक
 (महादेव प्रकट होइत छथि)

महादेव-अहा हा देवगण !! भीतर पैसल जाओ, आसनपर बैसल जाओ ।
 चिन्तापरायण अपने लोकनिक विना विशेष कारण पदार्पण नहि भय सकैछ ।
 मुदा सर्वशक्तिधोरक शत्रुमारक अपनेलोकनिकेँ के चिन्ता दय सकैछ ?
 दैत्यारि ! प्रजापति ! तथा देवेश ! की आदेश ? कहल जाओ । आत्मीयता
 गहल जाओ यद्यपि अपनेक दर्शनसँ हृष्ट छी मुदा संयुक्त आगमनक चित्रपर
 आकृष्ट छी ।

विष्णु—हे सर्वज्ञ ! अपनेसँ कोन बात अज्ञात अछि तथापि आज्ञा पाबि
 निवेदन करैत छी कर्तव्यपथ धरै छी ।

क्रूरताक अतिविपुल खजाना मानू तामस रूप
 शुम्भ एखन बलदर्प राखिकेँ बनल विश्वकेर भूप
 वर्चरता टपि रहल परिधिसँ कोलाहल मचि गेल
 दबल धर्म अन्यायवृद्धिमँ पापे शासक भेल
 लूटि स्वर्गकेँ, पकड़ि अप्सरागणिकेँ, दयलक
 नन्दनवन विध्वंस, रत्नचय करमे धयलक
 रक्तगणकेँ मारिपीटि भयभीत बनओलक
 विजयपताका गाढ़ि महोत्सव सहित मनओलक
 सकलदेव संग अमरपति स्वयं पड़ा गेला जखन

वेद गाय ऋषि मुनिगणक कथा कोन दुःखद तखन

महादेव—जनार्दन ! पापीसँ विश्वकेँ उद्धार कएनिहार भयक पापवारसँ
 पार कएनिहार अपनहि छी । के अपनेसँ महान अछि ? महामान अछि ?
 जखन अपनहुक चक्र वक्रे भए गेल तखन मानबाक चाही जे सब ! व
 असुरसँ हारल अपन शक्ति छाड़ल । (ब्रह्मादिश) हे पितामह ! अप

अमरहीर छी, जँ अपनहि अधीर भए जाएव तँ के वीर कहाओत ? एहि पीरस बचबाक कोनो उपाय आनल जाओ, कूटनीति सानल जाओ ।

ब्रह्मा—महादेव ! अपनेक ई विनीत थिक, पैघक रीति थिक । हमरा श्रेष्ठ कहल गेल अछि । वस्तुतः अपने सर्वश्रेष्ठ छी तहि हमरालोकनि दुःखपयोधिक एकमात्र तरण अपनेक शरणमे आएल छी । आव अपने देवगणक परम्परागत मर्यादा बचाबी वा पचाबी अपनेक हाथ अछि । ई देवगण नतमाथ अछि ।

महादेव—(हँसैत) हमरा तँ एके उपाय सुझैत अछि, हमर बुद्धि बुझैत अछि । सभहिगोटय मीलि एकस्वरसँ आदिशक्ति जगज्जननी दुर्गाक प्रार्थना करी । हुनकहि कृपासँ हमरालोकनि एहि दुःखसागरक पार पावि सकैत छी । हेतु जे ओ दिव्य-अस्त्रक बलेँ शुम्भ-निशुम्भकेँ मारबामे परम शक्ता छथि आ देवगणक प्रीत स्वभावतः अनुरक्ता छथि ।

इन्द्र—(जय - जयकार करैत) अवश्य, अवश्य अपनेक आदेश सर्वथा शिरोधार्य । एखनहि ई कार्यक्रम सामूहिक स्तुतिरूपमे होयबाक चाही ।

(महादेव उठैत छथि)

(सभहि गोटय दुर्गाक प्रार्थना करैत छथि)

करुणामयी देवि ! करुणाकरु हे ।

विश्वक सकल आदि जननी अहीं छी

बलखानि ! शिशु जानि सङ्कट हरु हे ॥

ककरा कहब आनू के शक्तिशाली

जननी ! भयद खड्ग करमे धरु हे ॥

ढूवैछ सुरवृन्द अति-दुख उदधिमे

करुणा-तरी आनि जलदी तरु हे ॥

(दुर्गा प्रकट होइत छथि)

दुर्गा—अमर प्रवर ! अहाँलोकनिक ऊपरूहम अत्यन्त प्रसन्न छी । जे वर माँगी आ मांगू आ दुःखक पहाड़केँ भांगू ।

इन्द्र—हे महाशक्तिरूपे भगवति जगज्जननि दुर्गे ! यदि अपने हमरा लोकनि पर प्रसन्न छी तँ राजसक अखर्व गर्वकेँ जारि, राष्ट्रद्रोही दुष्ट शुम्भकेँ मारि, कलदेवकेँ बचाउ, आनन्द मचाउ ।

दुर्गा—एवमस्तु । हम शुम्भके अवश्य मारव, अहाँलोकनिक दुःखक
माया - परदाके अवश्य फारव ।

(दुर्गा अन्तर्हित होइत छथि)

इन्द्र—(प्रसन्नमुद्रामे 'दुर्गाक जयहो' 'जयहो' कहि) जगज्जननी दुर्गाक
भक्ति धरैत जय-जयकार करैत चलै चलू । आव विजयमे सन्देह नहि ।
(महादेवदिश) हे शिव ! ई अपनेक अनुग्रह थिक जे हमरालोकनि दुष्टग्रहक
विग्रहरूपनिग्रहसँ बचाओल जारहल छी (आकाशदिश ताकि) दुष्ट शुम्भ-
निशुम्भ ! थम्ह-थम्ह आव तोहर अहङ्कार पहाड़केँ ढाहि दैत छियौक, समस्त
राक्षसकेँ यमपुरी साहि दैत छियौक ।

महादेव—चलू चलू ।

('दुर्गाक जयहो' कहैत सभक प्रस्थान)

[प्रथम अङ्क समाप्त । परदा खसैत अछि]

द्वितीय अङ्क

दृश्य १

(स्थान शुम्भक दरवार । गान - बजान भए रहल अछि)

चण्ड—(आवि माथ भुकाय) श्रीमन् ! सरदारक दरवारमे आव
शोमाक अपार पारावार बनि गेल । सकल विश्वक ध्यानक एक आधार बनि
गेल हेतु जे

व्योमयान, ऐरावतहाथी, उच्चैःश्रवा तुरङ्गम

महापद्मनिधि, पारिजातद्रुम, पाश, छत्र, रथ, अनुचर ।

शक्ति, त्रिशूल श्रृति जे दुर्लभ वस्तु विश्वमे अदृष्ट ।

आवि चुकल अपनेक महलमे स्थिररूपे श्रीसंयुत ।

शुम्भ—कह, कह की कहबाक छौ से साफ साफ कह...

चण्ड—प्रभो ! हिमालयक दरीलग एक सुन्दरी अछि गोहेन
सौन्दर्यवती बुद्धिमती नारी यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, नाग, देव कोनहु वंश इ

अछि । ओकरा आगाँमे मेनका, रम्भा, तिलोत्तमा सेहो बेहोस भए सकैछ
महाराज ! यत्नकय ओहि कन्यारत्नकेँ अनबाओल जाय, गृहलक्ष्मी बनाओल
जाय ।

मुण्ड—महाराज ! ई विषय सत्ते थिक । एहन सुन्दरी नारीकेँ सरकारो ने
देखने होएब । एकवेर देखि लेल जाओ, आश्चर्ययुक्त भए गेल जाओ ।

निशुम्भ—(प्रसन्न होइत) तखन तँ ओ धन्या थिकि । कोनो भाग्य-
शालीक कन्या थिकि । भेँटी चढ़एबाक हेतु पिता विचार कएने होएत तेँ
ओकरा आगाँ धएने होएत ।

शुम्भ—युवराज ! अहाँ जाकेँ आँखि लड़ा आउ, मन गड़ा आउ । तावत
किछु ने कहबैक गम्भीर बनि हाव - भाव सभ सहबैक ।

निशुम्भ—जे आज्ञा (चण्ड-मुण्डक सङ्ग जाइत छथि)

चण्ड-मुण्ड—युवराज ! देखल जाओ (दूरहिसँ देखबैछ)

निशुम्भ—अह ! हा आइ आँखिक फल लाभ कयल

(गीत गबैछ)

हिनक आँखिक चपलशरसँ हमर उर गेल अछि भोकल
हँसीकेर कौमुदी द्वारा तपातम भेल अछि रोकल
मनोहर काञ्चनक लतिका कली - मद मद्यसँ मत्ता
हँसाओल जे स्वयं हँसइत युवक मन - भृङ्गसँ टोकल
इतर लभ रहत बुझि तुच्छे हिनक हम ध्यानमे लागल
अपन सबुद्धि आहुतिकेँ मनोजक आगिमे भोंकल

(कामबशीभूत भय) चण्ड-मुण्ड ! करह कोनो उपाय हमरा एकरासँ
विवाह भय जाय । (अधीर होइत) चलह एकरा पकड़िकेँ एखनहि हम अपन
सज्जल महलमे लए जाएब (विचित्र चेष्टा करैछ) अहाहा केहन सौन्दर्य !!
केहन गर्व ! आब नहि थम्हि होइत अछि, की ई जादू जनैये ? आश्चर्य !
आश्चर्य !! खन संसारमे दोसर कोनहु दिस मन नहि जाइत अछि, तन
तिलमिलइत अछि । बचाबह, बचाबह । (खसैत छथि)

चण्ड-मुण्ड—युवराज ! शान्ति धारणकरु ! शरीरमे जागरण आनू ! हम
आँखि सुवचारणक हेतु परायण छी । किन्तु एखन महाराजक आदेश नहि

मानव दानव-वंशक ध्वंसक होएत । श्रीमन् ! युवराजे जँ राजाक आज्ञा टारय तँ ओ राज्य कोना ने हारय ? हेतु जे

आज्ञाकेर दिवालमे आदर फाटक बन्द

प्रभुता कोठलीमे सदा राज्यश्री गति मन्द

तेँ एखन चलू महाराजसँ आज्ञा लय लिय । तखन जे चाहब-आहब अथवा विवाहब से होएत युवराज ! त्रिभुवन विजयी भय अनुपमनयी भय परम वीर अहाँ किएक अधीर होइत छी ? दानव-कुलाभिमान दिश सावधान होउ ।

निशुम्भ—(दारू पिबैत) सुन - सुन (कनियेँ जोरसँ) आ जँ राजा राजमद सरिता अवगाहथि । अपनहि कनखी चलबय चाहथि तखन की करी, कोन पथ धरी ?

चण्ड मुण्ड—से त अहाँ दुहू भाँइकेँ अपनहि फरिछाबए पड़त । एकमत पर आबए पड़त । हमर तँ दुनू गोटय रक्तक छी । रिपु-भक्तक छी । जँ एहि हेतु अपनहिमे दुहू गोटय अड़ि जाएब, लड़ि जाएब तँ सभ कएल-धएल गोबर भए जाएत, शत्रुकुल दोबर भय जाएत । चलू-चलू एखन सोभे राजाक आगौं ।

(दुहू गोटय जाइत छथि)

शुम्भ—(हँसैत) कहू युवराज ! की देखल ? सत्ये ओ नारी बड़ भारी सुन्दरी छैक ?

निशुम्भ—महाराज ! की कहू, किछु काल सँ । एहन सर्वोत्कृष्ट सुन्दरतासँ ई आँखि आइये परिचित भेल । अहा हा ! धन्य रूप !! धन्य रूप !! सुगंधभय गेल । हम तँ ओहि मोहनी रूपपर वास्तवमे उन्मादी जेकाँ करए लगलहुँ, लगले धैर्यवान्हसँ दूर भगलहुँ मुदा चण्ड-मुण्ड टोकलक आ रोकलक । श्रीमन् ! एखन धरि ओ ओकर्षक रूप आँखिसँ नहि हटैत अछि, प्रेमक आपार पारावार हृदयमे नहि अटैत अछि ।

शुम्भ—हँ !! से बात ? हृदयमे एहन घात ? बस तखन दूत दे न चण्ड-मुण्ड जाओ पुनर्दर्शनक घेबर खाओ ।

चण्ड-मुण्ड—जे आज्ञा...

शुम्भ—सुनह तौँ पहिने ओ कुरा कहिहक हमर वा निशुम्भक महिनी बनबाक हेतु । एखन अनबाक हेतु जँ से स्वीकार नहि करओ, उतटेबाट ध तखन जबर्दस्ती पकड़िकेँ लबिहह आ विजय-गीत गबिहह ।

(चण्ड-मुण्ड जाइत अछि)

[दृश्य—मोहिनीरूप भारिणी दुर्गाक स्थान]

चण्ड-मुण्ड—हे त्रिभुवनसुन्दरी ! हम दानवक पूत छी, महाराज शुम्भक पठाओल प्रेमदूत छी ! देवीजी अपनेकेँ सुनले होयत तीनू लोकमे सभसँ अधिक शक्तिशाली अतुलगुणमाती परमनयी विश्वविजयी सम्राट शुम्भ छथि । हुनक सङ्ग अथवा हुनक अनुजक संग अपने प्रेम धरी । विवाह करी कारण इन्द्रादि सकल देवता हुनक अधीन छथिन्ह । आदेशमे लीन छथिन्ह ।

दुर्गा—हे दूत ! हमरा नीक जेकाँ बुझल अछि । एखन परम पराक्रमी अत्यन्त श्रमी महामति शुम्भ-निशुम्भ त्रैलोक्याधिपति बनि गेल छथि, किन्तु हमरा एक अविचार भेल, एक विचित्र प्रतिज्ञा कयना गेल

जे क्यो हमरा जीति युद्धमे हमर दर्पकेँ करता चूर्ण
पत्नी बनि हम तनिकाहि सङ्गमे रहि प्रमोद पाबी परिपूर्ण
अतः शुम्भ आवथु ओ लाबथु युद्धक शीघ्र उपक्रम
जीति, प्रेममे बान्हि करथु सुख सर्वदाक मैत्री मम

चण्ड-मुण्ड—सुन्दरी ! अपनेकेँ सौन्दर्यक अभिमान अवश्य थिक किन्तु शौर्य आ सौन्दर्यक दुहु दूइ बस्तु थिक । परम बलवान् इन्द्र, वरुण, यम, कुवेर जाहि शुम्भक आगाँ नहि रहि सकलाह; सूर्यो जनिक प्रताप नहि सहि सकलाह, अहाँ अबलाभय सबला जेकाँ बजैत हुनकासँ युद्धमे कतेक काल रहव ? को एओ फ़हार सहि ? हेबर-वाँणी ! अहाँ पुरुष नहि नारी थिकहुँ—

धूनल तूर कृमान सहय नहि जे बसातकेँ
पट्टजिनी नहि सहि सकैत अछि हिमक पातकेँ
सोनाक नहि हो खन्न शत्रु पर चालित रणमे
नहि सरिता बहि सकय नयन नोरक अणुकणमे

हे त्रिभुवनमोहनी ! अपनेकेँ उचित थिक छै

त्रिभुवनविजयी सार्वभौमकेर सजल महलमे
रहि लूट आनन्द प्रेममय हुनक कहलमे
नहि तँ हम चिखिआब जबरदस्ती लए जाएब
असुरीनिकरक हास्यसंग दुर्गतिओ पाएब

दुगा—(क्रोध कर) चुप बंदमाश !!! ज कहालियाँ क - श्रुतुआलियाँ
से जाकय शुम्भकेँ कहुनगय, जँ ओ भुजमे शक्ति रखने होएताह तँ रणभक्ति
अवश्य देखओताह ।

चण्ड-मुण्ड—(आश्चर्यित होइत) बेस-बेस ! दुर्दशा लिखल अछि तेँने
एहन कुविचार सिखल अछि ? बेस-बेस ।

(दूत जाइत अछि)

दृश्य २

(प्रहसन)

(डाँडमे बटुआ खोसने काँखतर फराठी रखने हाथमे नोसिदानी राखि
नोसि सुड़कैत सोनफीबाबूक प्रवेश)

सोनफीबाबू—(नोसि सुड़कैत) च च चललहुँहँ प प पाठशाला पर
बौआकेँ जे जे जे कि ने से कनियेँ दे दे देखैले । सु सु सुनैछी जे वैदिकवा
वववड़े मारै छै । आइ, जेजेजे कि ने से नननछ भय जेतैक । हहहमरा एकेटा
वेटा अछि ? मममारिये जजजँ देत त कककतसँ आओत

ठीठरबाबू—(पाछासँ) सोनफीकका ! सोनफीकका !

सोनफी बाबू—(घूरि) बबबड बूड़ि छ हओ गगगदहासन भय गेलाह
आगि पपपानियो ने बुबुबुभैछहक ? यात्रापर पपपाछाँसँ टोकि देलह ।
धूरवूडि एः ककहत आब कोना जजजाउ ।

ठीठरबाबू—(हँसैत) कनियेँ नोसि दिय । हमहूँ त यात्रेपर छी ।

सोनफीबाबू—(धुआँसनमूह कएने) कककपार हँसै छह । दाँत बबबाबि
देलह की लललाज पड़ा गेल (नोसि दैत) तोँ कककत जेजेजे किने से चललाहे ?

ठीठरबाबू—वैदिक बजओने छथि तेँ पाठशालापर चललछी ।

सोनफीबाबू—(बारंवार नोसि सुड़कैत) ततखन जेजेजे कि ने से चलह
दुहू वववापूत जेजेजे हेतै से हेतै ।

(दुहू गोटय जाइत छथि)

(दृश्य — पाठशाला; वैदिक नोखेभा पढ़ाय रहल छथि)

वैदिक—हे सुनैत जो । दुर्गा पूजाक चन्दा काल्हिये सब नेने अविहेँ ।
सुनलेँ ('हँ' 'हँ'क सामूहिक ध्वनि) बेस, पढ़ैजो मोन लगाकेँ (फराठी उठाकय)
आ नहि पढ़वें तँ मारि फराठी मारि फराठी धूनि देवौ (फेकना दि) रओ
फेकना ! सुना अग्निमीले पुरोहितम् ।

फेकन—अग्नि मी ई ई लेएए।

वैदिक—(तमसा कय मूह विजकबैत) लेएए करैत छथि । ई बूढ़ि खेसाड़ी रे । मूह केहेन लगैये अकासकोकोड़ जेकाँ । ईह (दाँतपर दाँत बैसाय) लोढ़ा बसन्त कहौँ के । कतबो बुभा आउ, कतबो बुभा आउ । फेर, ओहिना लेएए गिरगिड़ी भरैत छथि । सुन लेए एएए ए एना कही ।

फेकन—अग्निमीले एएए (ओहिना गिरगिड़ी दयकेँ पढ़ैत छथि)

वैदिक—(खूब क्रोध कय) आ दूर बूढ़ि गदहवा । लेएए करैत छथि । ईह चपाट-नन्दन ! थुथुन केहेन लगैये, वसविट्टीक छुछुन्नरि जेकाँ । उल्लू कहींके, परहऽ अएलाहे परहऽ (दाँतपर दाँत बैसाय) ईह मन होइये ठोंठ दवाकय मारिये दी ।

सोनफीबाबू—(मन्दस्वरसँ) ठीठर, ठीठर ! सुसुसुनैछह हहओ नुकाकेँ देखह, तततमासा आ जँ हमरा बेबेबेटाकेँ ई एको थापर मममारत तँ आइ वैदिकबेके विविविना ठोकने नहि रहबैक ।

वैदिक—फेर कही अग्निमीले०

फेकन—लेएए (ओहिना कहैत छैक) ।

वैदिक—(अत्यन्त क्रोध कय) भाग अलच्छा (पोथी छीनि फेकैत) भाग भाग । रओ तोरा बापकेँ एको अच्छर अएलौ जे तोरा अओतौ । जो भाग भाग ।

सोनफीबाबू—(प्रत्यक्ष भय) की ओ वैदिक ! किकिकी बजलहुँ ? अहूँसँ हम भुभुभुसकौल छी/ आदुर्छी, आदुर्छी, आदुर्छी, आदुर्छी !

(दूहूगोटा मे दुर्छीक वर्षा होमय लगैत अछि)

ठीठर—(मूह विजकबैत) जय नारद, जय नारद, जय नारद (हँसैत छथि)

(परदा खसैत अछि)

दृश्य ३

(स्थान—युद्ध भूमिक निकट शुम्भक शिविर)

निशुम्भ—हे शत्रुगर्वमोचन ! श्रीमान्क आज्ञासँ धूम्रलोचन साठि हजार एकेँ लय ओहि सुन्दरीपर प्रहार करए लागल ।

म—तखन की भेलैक ?

निशुम्भ—जखनहि धूम्रलोचन युद्धक हेतु तैयार भेल तुरन्त ओ नारी हुँकारहिसँ ओकरा खसा देलक, अन्हर जालीमे फँसा देलक ।

शुम्भ—(क्रोधकय) ईह सैन्य ककर मूढ़ तकैत छल ?

निशुम्भ—सैन्य यावत् आगाँ बढ़य चाहलक तावत एक सिंह सैन्यमे पैसि तितर-बितर करैत पछाड़य लागल आ जानसँ मारय लागल ।

निशुम्भ—(हँसैत) एहने सैन्य छल जे एक सिंहहुकेँ नहि मारि सकल ? ओ सेना छल की मेना ? धत्तेरीकेँ !!! पठार चण्ड-मुण्डकेँ (क्रोधक मुद्रामे) भोट पकड़ने भूमिपर रगड़ने नेने आनओ आ ठानओ अपन वीरता ।

चण्ड-मुण्ड—(प्रवेश कय) जे आज्ञा (तरुआरि खीँचि) श्रीमन् ! एहिसँ सिंहकेँ काटि भूमिकेँ पाटि ओहि अनारी नारीकेँ जल्दी हाजिर करबैत छी ।

(चतुरङ्गिणी सेनासहित प्रस्थान करैत अछि)

दुर्गा—(तरुआरि भजैत प्रवेश कय) विश्वपरितापी पापीकेँ मारबे हमर मुख्य कर्तव्य थिक ।

चण्ड—(प्रवेश कय) थम्ह कने हम कर्तव्य घाटक बाट देखा दै छियौ (तरुआरि भजैत अछि) ।

दुर्गा—(क्रोधेँ काली बनि) रे पापी असुरगण ! भएजाहँ सावधान शीघ्र करवह यमपुरक प्रस्थान ।

(घोर युद्ध होइत अछि । अन्तमे चण्ड तथा मुण्डकेँ मुण्डे काटि हाथमे लटकाय सैन्यकेँ देखबैत छथि । सैन्य 'बाप रे बाप' करैत भगैत अछि) ।

(आकाशमे 'दुर्गाक जय हो, दुर्गाक जयहो')

दुर्गा—हे देवगण ! अहाँ लोकनि उत्कण्ठासँ आहत भय सहायतार्थ आगत छी । धन्यवाद । किन्तु तावत तमासा देखू । जखन हम रणभूमिमे उतरलहुँ, शत्रुपर अड़लहुँ तखन आव शोणितक धारकेँ विना बहओने, शुम्भक गर्व किलाकेँ विना ढहओने बैसि नहि सकैत छी । (महादेवदिश) हे महादेव ! अहाँ दूत बनिकेँ शुम्भक ओतए जाउ । अन्तिम निर्णय पाउ ! प्रौढ़ रहि शुम्भकेँ ई बात कहि आउ ।

चाही जँ कल्याण अहाँ तँ शुम्भ ! बनू नतमाथ
हमर बातकेँ मानि रहू युग युग जीवैत सनाथ
तीनू लोकक शासनकर्ता इन्द्र बनथु पुनि आज
यज्ञक भाग पूर्ववत पाबथु प्रमुदित देवसमाज
अहाँ सबहुँ पाताल निवासी बनि बचाउ निज प्राण
नहि तँ मानू एखनहि अछि सब असुरक गण म्रियमाण
(महादेव दूत बनि जाइत छथि)

रक्तबीज—(तरुआरि भजैत प्रवेश कय) एक अबला बालाक ई शान ?
एहन अभिमान ? दैत्यक उन्नतवर्गकेँ गर्तमे डुबओनिहार शर्त !!! इन्द्र तीनू
लोकक राजा बनथु दैत्यगण पाताल खनथु, ??? आइ हम दुर्गाक प्रचण्ड
घमण्ड विना खण्ड-खण्ड कएने नहि छोड़बैन्ह । (जोरसँ) सुनै जो—कालक !
दौहद ! मौर्य ! कालकेय ! तोँ चारुगोटय अपन-अपन अक्षौहिणी सेनालय
चारुदिशा घेरि ले, वैर ले आ देवगण समेत दुर्गाकेँ एही रणभूमिमे मारि
खण्ड-खण्ड काटि दे, शोणितसँ माटि पाटि दे ।

(रणदुन्दुभी बजैत अछि)

पहिने (तरुआरि देखवैत) एहि सँ हम दुर्गाकेँ कटैत छी (आगाँ बढ़ैछ)
इन्द्र—(भयभीत होइत) जगजननी दुर्गा ! बचाउ, बचाउ । महाबली रक्त-
बीज सेनाद्वारा चारुकातसँ घेरि लैत अछि । आगासँ दिव्यास्त्र लेने अवैत ई दैत
महान् भय दैत अछि (थरथर कपैत) देवगणक प्राण बचाउ ।

विष्णु—हे आदिशक्ति जननी ! आब अपन अलौकिक अपार चमत्कार
देखाउ ।

दुर्गा—(विहुँसैत) अहाँलोकनि कोनो चिन्ता जनु करी, भय नहि धरी ।
हम साभिमान छी, सावधान छी/ बहुत शीघ्र रक्तबीज दैतकेँ यमलोकक पाहुन
बनाय दैत छियैक ।

(भयङ्कर महाकालीक रूप बनैत छथि एवम् आनो अनेक दुर्गाक आवि-
र्भाव होइत छैन्ह)

हे महाकाली चारु दिशा घेरि असुर संहारू ।

(लाखक लाख सैन्य काटल जा रहल अछि)

नेपथ्यमे

(महामति सेनापति 'रक्षा करू, रक्षा करू,' प्राण संकटमे अछि । त्राणा त्राण)

रक्तबीज — (जोरसँ गजैत) कोनो चिन्ता ने । अहाँलोकनि आगूसँ भागू नहि । अड़ल रहू, अड़ल रहू । हम आवि रहल छी, अतिशीघ्र विजय पावि रहल छी (अनेक विकट भट बनि दुर्गापर बरोबरि प्रहार करैत अछि)

आकाशवाणी

(हे दुर्गा ! अहाँक सकल शम अवसन्न भेल जाइछ । एकर खसल शोणितक एक एक विन्दुसँ एक एक महाबली असुर उत्पन्न भेल जाइछ)

दुर्गा—कोनो चिन्ता ने, कोनो चिन्ता ने । निर्भय रहू, विजय गहू (महाकाली रक्तबीजकेँ कटैत शोणित पीने जाइत छथि । भयङ्कर युद्धक बाद रक्तबीज भूमिपर खसैत अछि । सेना भभरैत अछि)

(आकाशसँ दुर्गाक उपर फूलक वर्षा)

दृश्य ४

(स्थान—सड़कपर दुइ बटोही)

दुर्धर—आश्चर्य, आश्चर्य, आश्चर्य । एक मौगी रक्तबीजकेँ खिहारिकेँ मारि देलकै । जाहि रक्तबीजक डरेँ इन्द्रक कोन बात, विष्णु धरि कंछी कटैत पंछी जेकाँ-खोता खोता नुकाइत छलाह ।

दुर्मुख—आ दुर बुड़ि गप्पी, अबला कतौ सबला बनि कमर कसि समर करै छै ? ओ बाला त बन्द खिड़कीवाला घरमे रतुका युद्ध लड़ै छै । (जनतादिश) ईह गप्पीसभ ऊठि वैसल । सुनू ने आव कहतै सूइमे फार पैसल, चुटोक पाएरमे हाथो दबल, हिमालय पहाड़ । तवल । आ की सत्ते ?

दुर्धर—(तमसा कय) धत्तेरो सत्ते कै । जत्ती फुरए तीते नै बाजो । जानो ढाँढ़क मन्त्र ने दी दराधक माथा हाथ !!! दुर बुड़ि खेसाड़ी बुद्धिक बखारी, नहि ज नैछेँ त मूह मून आ हमरासँ सून ।

दुर्मुख—वेश कह की कहै छेँ, रओ अलच्छा ! (हँसैत अछि)

दुर्धर—(खूब तमसाकय) तोँ हँसै कियेक छेँ रओ ? अधिकारी जेकाँ बड़ बुधियारीक दावा छौ ? (हँटिकेँ) जो तोरा नहि कहबौ । एते गदहपनी नहि सहबौ । मौगियाह कहाँके !! आनक बातो ने सुनताह आ कातो ने रहताह ।

दुर्मुख—(लग जाय) तोरा तामस भय गेलौ, रओ मित्ता । कह, कह जे तोँ कहवै—आकाश उनटि गेलै, पाताल पनटि गेलै, सब सुनबौ आ गुनबौ ।

दुर्धर—फेर सएह वात । आव देवौ एक लात । तौ बड़ बूढ़ि छै । दुर्मुख छै तहि ने दुर्मुख सन वदनाम पड़लौ नाम । ईह घौ घा-बसन्त कहीके ??? खरहोड़िक नढ़हन्त कहीके ???

दुर्मुख—(वाँहि पकड़ि) कह, कह । आव नहि किछु बजबौ (अपन मूहके थपड़वैत अछि)

दुर्धर—(हँसैत) वेस त सून आ ला कनियँ तमाकू चून । (तमाकू खाय) जखन देवतां सभ हारि गेलै तखन एकटा दुर्गा नामक मौगी जागलि । देवता दिससँ युद्ध करए लागलि । सोठि हजार सैन्यसहित धूम्रलोचनाकेँ मारि देलकै आ दैतक गुमान परदाकेँ फारि देलकै ।

दुर्मुख—अरौ वा रौबा । कोना मारि देलकै रओ ? आनि रओ !

दुर्धर—सून बुड़िलेलहा गदहा ! तखन चण्ड-मुण्ड लाखो सेनाक संग लड़ैले गेल । ओकरहुँसभकेँ मारि देल ।

दुर्मुख—(अकचकायकेँ) ओकरहुँसभकेँ मारि देलकै ? एँ...एँ...एसगरे मौगी एँ ? एँ ? बाप रे बाप, जुलुम भेल । दुनिया उनटि गेल । बाप रे बा !!! हँ हँ, तखन की भेलै ? मौगी कतए गेलै ?

दुर्धर—ताहिपर रक्तबीज चारि लाख सेनाकेँ लय चललै । चारूकात हूलि देलकै, सभकेँ घेरि लेलकै । अपने रथपर चढ़ल दुर्गाकेँ कटैले आगाँ बढ़ल । आ कि लगले नओटा दुर्गा बनि गेलै, सभक हाथमे दिव्य-अस्त्र-शस्त्र छलै आ सुरसाक मूहसन भयङ्कर मूह छलै । सभकेँ मारि देलकै, रक्तबीजकेँ खण्ड-खण्ड काटि सभटा रक्त पीवि लेलकै । मुण्डक माला सीबि लेलकै । देवता सभ जय-जय कार्ली करैए लगलै । आकाशसँ फूल भरए लगलै ।

दुर्मुख—रओ मित्ता ! तखन त ओ मौगी शुम्भहुकेँ मारि देतैक कारण असल योद्धा रक्तबीजे छलै । मानि जो असुरक महाशक्तिक बीजे छलै ।

दुर्धर—एहू विषयमे कोनो संशय ? पड़ा पड़ा । नहि तँ जान नहि बचतौ, मान नहि बचतौ । पड़ा पड़ा ।

(पड़ाइत अछि)

दृश्य ५

निशुम्भ—(शोकसँ विकल) हा दैव ! आव हम ककर चण्डभुज दण्ड पर घमण्ड करब ? कोन सेनानायक आव हमर सहायक बनत ? अहा !

प्राज्य असुरक राज्य कोना वाँचि सकत ? शत्रुक आगाँ कोन अभिमान पर
आनन देखाएब ? (कनैत छथि) हा अपर सहोदर वीरवर राजभक्त रक्तबीज !

(कलिङ्गदा)

बाँचत कोन विधि बाँचत रे असु तब बिनु जगमे
ककरा कहब सुनत के रे नहि देखी मगमे

असुरक भाग्य अस्त पर्वतपर

तेजो रहित सहित भीतिक वर

काल-ग्रह केर कुटिल-गालतर पहुँचल लगमे

कतएँ अहाँ चल गेलहुँ वीरवर

छोड़ि दुखक मम बीच भयंकर

निस्सहाय अति हाय !!! एकसर पड़ल विकलमे

(कनैत छथि)

- शुम्भ—(धैर्य धारि) युवराज ! अहाँ आइ रणधीर वीर भयकेँ अनु-
त्साह धरै छी, विषाद करै छी (बाहु उठाय) एकमात्र हमर बाहु शत्रुकेँ
पछाड़बामे पर्याप्त अछि । एखन धैर्य धरबाक समय सम्प्राप्त अछि । चिन्ता
जनु करू, धैर्य धरू । वीर युद्धमे सतत लीन रहैछ । जीवन मरण तँ प्रकृतिक
अधीन रहैछ ।

जीवन मरणक । दुइ खम्भापर अछि ठाढ़ निकेतन संसारक
जन्मक सङ्गहि निर्णय होइछ सब प्राणीगण केर संहारक
निश्चित वस्तुक थिक शोक व्यर्थ, भावीकेँ क्यो नहि टाँचि सकय
जे अजर अमर शाश्वत अछि तेहि आत्माकेँ क्यो नहि मारि सकय

महाशूर युवराज ! युद्धक्षेत्रमे कटब-मरब वीरक धर्म थिक । एक
ऐतिहासिक महान् सत्कर्म थिक । रक्तबीज आइ धन्य थिकाह जे आसुरी
मर्यादा रक्षार्थ प्राणक आहुति कयलैन्ह । मानू ओ प्रठिष्ठाक आहुति पथ
धयलैन्ह । हमर अनुज भय युद्धमँ नहि थाकू । समयदिश ताकू । उठू, चलू
अहाँ सन शक्तिधर के दोसर अछि ? अहाँक आगाँ के ठाढ़ भय सकैछ ?
के गर्व कय सकैछ ? चलू रक्तबीजक बदला चुका ली । सुनू रणदुन्दभी
बजैत अछि । चलू चलू, ओहि मौगीकेँ पकड़ि खण्ड - खण्ड काटि खाए
जाइ (तरुआरि भजैत छथि)

निशुम्भ—महाराज ! अपन पक्षक स्थिति नीक नहि अछि, सेनापतिक रीति ठीक नहि अछि । एहने बेरमे शत्रुसँ मेल कएल जाइत छैक, युद्ध खेल नहि थिक हे अग्रज ! नीक होइत कोनो कपटसँ एहि युद्धक संकटसँ हटि जइतहुँ ।

शुम्भ—छिः छिः । शत्रुसँ हीन सन्धि कय की हम अपन उज्ज्वल कीर्तिमे कायरताक कज्जल लेपू ? कदापि नहि पौरुषसँ विमुख होएव नपुंसकक काज थिक । बलहीन नगएय व्यक्तिक व्याज थिक । युवराज, एहन बात बजबो लाज थिक ।

निशुम्भ—तँ की एक अबला नारीक हाथेँ हारि नीक थिक ?

शुम्भ—(हँसैत) असुरराज युवराज ! अहाँ भ्रममे पड़ल छी । अज्ञानताक पाँकमे गड़ल छी । प्रबला दुर्गाकेँ अबला बुझैत छी, कान्तिमय चपला बुझैत छी । अहाहा, अहाँ अन्तर्दृष्टिसँ हटल छी, घोर अन्धकारमे सटल छी । मानू आओर जानू जे देवतहिसँ भगड़ि रहल छी । लड़ि रहल छी । जे असुरनिकरक द्वेषमे सयत्न नैसर्गिक सपत्न थिक । (क्रोध कय) कोनहु परिस्थितिमे ओकरा हम नहि छोड़ि सकैत छी आ ने अपन प्रतिज्ञासँ मूढ़ मोड़ि सकैत छी । हम प्रतिशोधक प्रवाहमे बहि रहल छी । अहाँकेँ बारंबार कहि रहल छी, यदि अहाँमे थोड़बो आत्माभिमान अछि, वीरताक शान अछि त आउ । पौरुष देखाउ । सफलतामे किञ्चितो संशय नहि, लेशतोऽपि भय नहि ।

निशुम्भ—(तरुआरि खीँचि) महाराज ! वी अहाँ हमरा बुझलहुँ डेरवुक निस्सार निराधार बेकार ? हम कालहुसँ नहि छी भय माननिहोर । चलू, चलू ।

(नाटकीय ढङ्गसँ तरुआरि भजैत अछि)

(स्थान—समर भूमि)

दुर्गा—(दूरहिसँ देखि जोरसँ गर्जन कय) आ'आ । तोरहि तँकैत छलियहु (क्रोध कय) एतेकटा बदमासी !!! विना अपराध देवालयकेँ लूटि लेब !!! गोमाताकेँ कूटि देब !!! तपोवनवासी ऋषि-मुनिकेँ गारि देब, मारि देब !!! अधर्मी पापी राक्षस शुम्भ ! आ, एखनहि तोहर गर्व पहाड़केँ ढाहि दैत छियौक, तोरा यमपुरी साहि दैतः छियौक ।

शुम्भ—एँऽ ई अभिमान !! एहन ज्ञान !! आनक बल पर समर ! (बाँहि उठाय) देख ई प्रचण्ड भुजदेण्ड हमर । कर देवताक भक्ति, लगा

अर्पन भरि शक्ति । आइ प्राणकेँ गेले मान । आव असुरक विजय मल
जान । बचा !! बचा !!

दुर्गा—(हँसैत) विश्वमे हमर आगाँ दोसर के अछि ? (सभ दुर्गा
एकाकार होइत छथि) की आव की देखैत छह, बस हम एके संसारमे व्याप्त
छी आ तोहर महाकाल भयकेँ एतए सम्प्राप्त छी । केवल पापीक नाशे हमर
लक्ष्य अछि, तोरा सनसन घमण्डी पाखण्डीक अभिमाने हमर भक्ष्य अछि
(धनुष चढ़बैत छथि) ।

निशुम्भ—चुप आत्मश्लाघाकारिणी ! सौन्दर्यगर्वधारिणी ! अनेक गोठय
मीलि कय रक्तबीजकेँ मारलेहें ताहिमे की गौरव ? आ विजय रव ?
(तरुआरि उठाय) आइ तोरा भयङ्कर वीरवरसँ भेँट कराय दैत छियहु,
बदला चुकाय लैत छियहु ।

(दुहूगोटामे भयङ्कर युद्धक बाद निशुम्भ पृथ्वीपर खसैछ)

शुम्भ—(तरुआरि खीचि) बाज, बाज आव की करियौक ? ई खड्ग
कोन अङ्ग पर धरियौक ? की दुहू हाथ छोटि लियौक आ की सकल अंग
खण्ड-खण्ड काटि दियौक । तौँ मौगी थिकेँ । तेँ हम एखन तक तोहर साफ-
साफ अपराध माफ कयने जाइत छलियौक, किन्तु आव नहि सहबौ । कदापि
रुकल नहि रहबौ । सावधान, सावधान ! अपन इष्टदेवकेँ स्मरणकर आ
जलदी यमपुरी गमन कर ।

(दुहूमे घोर युद्ध होइत अछि)

(नेपथ्यमे)

देवगण—हे महामाये ! असल पापी सुरमुनिसन्तापी दुष्ट इएह थिक ।
मारु, मारु (भयभीत होइत छथि) हे आदिशक्ति जगज्जननी दुर्गे ! ई
अत्यन्त बलवान् अछि तथा नितान्त सावधान अछि । जँ पछाड़ल नहि गेल,
मारल नहि गेल तँ हमरा लोकनिक रक्षा सदाक हेतु असम्भव मानू आ सुरक
अस्तित्वे अस्तगत जानू । त्राहि, त्राहि ।

दुर्गा—(गम्भीर मुद्रासँ) देवगण ! अहाँ लोकनि निश्चिन्त रहू, आओर
किछु काल क्लेश सहू ।

(नाना दिव्यास्त्रसँ भयङ्कर युद्ध होइत अछि)

शुम्भ—हे देवि ! एखनहुँ यदि अहाँ अपराध मानि ली, विश्वविजयी हमरा जानि ली, हमर अधीनता स्वीकार करी, शुद्ध हृदयसँ कोमल व्यवहार करी तँ हम सभ अपराध माफ कय देब आ पत्नी बनाय गृह-लक्ष्मी क रूपमे लय लेब ।

दुर्गा—अरे दुष्ट अभिमानी अज्ञानी शुम्भ ! एखन तक तोहर पैँ ठन नहि गेलहु अछि ? ओ गर्व खर्व नहि भेलहु अछि ? बेस !!! असुरेश !!! सावधान !! सावधान !! (त्रिशूल देखाय) एहि त्रिशूलसँ हम एखनहि भोकि, गर्दनि मोकि दैत छियहु । प्राणपंथीकेँ रोकि लैत छियहु ।

(नाटकीय ढंगसँ युद्ध करैत शूनसँ भोकैत छथिन्ह । शुम्भ पृथ्वीपर खसैत अछि)

(आकाशसँ पुष्पवृष्टि होइत अछि, विजय शंख बजैत अछि)

देवगण—(आवि) दुर्गाक जय हो दुर्गाक जय ।

अपनेक दयासँ देवि ! आज
बचि गेल सकल सुरगणक लाज
अन्याय भेल अत्यन्त दोन
सब प्राणी अछि आनन्द लीन
त्रिभुवनक एक अवलम्ब शरण
हे जननी ! धन्य अपनेक चरण

(भगवती दुर्गा इन्द्रकेँ राजगद्दीपर बैसबैत छथि । सकलदेवक संग नाटकीय ढंगसँ हाथू-छाहा आनन्द मनबैत, गीत गबैत छथि ।)

गीत

दुष्टकेर दुखमय हो अवसान
पापजनक नहि रहओ विश्वमे बहुत काल अभिमान
नहि पाबथु दुख दया सत्यबल कथमपि सुकृतनिधान
अधन धनी मिलि रहओ एक भय दुर्बल ओ बलवान
'जीवनाथ' करुणामय बुद्धिक सभमे करथु प्रदान
दुष्टकेर दुखमय हो अवसान

(मन्द-मन्द परदा खसैत अछि)

[दोसर अङ्क समाप्त]

सकलशास्त्रकानन - विहार - निर्भय - पञ्चानन
विविधग्रन्थनिर्माण - यशोमण्डित-भवआनन
कोविद - कुल - नुतचरण सनातनधर्मक नेता
दीनबन्धुभा जनिक पिता शास्त्रार्थ - विजेता
शर-शशि-सुरपथ-नेत्र-प्रमित विक्रम संवत्सर
जीवनाथकृत जानकीक नवमी अवसर पर
नाटक 'दुर्गाविजय' नाम पूरित शुभ क्षणमे
भेल समर्पित हुनक तरुण विसअरुण चरणमे
जैँ थिक गुण आ दोष सदा सापेक्ष सुनिश्चित
सबकेँ जैँ अछि मातृगिरिक सेवा परमोचित
अभिनयव्याजेँ पुण्यचरित-स्मृति-लोलुपता-वश
हमहुँ कयल सहसा नाटक निर्माणक साहस
दुर्जनकेँ सुभक्तैन्ह गुणहुमे दोषे केवल
माछी मच्छड़ ब्रणहि ताकि बैसि सयन अमलथल
भ्रमर सदृश रस-सुरभि-पक्षिपातोन्मुक्त सज्जन
दुर्गाचरितक सुधा एहिमे करता मज्जन

महाकवि विद्यापति

श्रीराजकमलचौधरी

प्रथम दृश्य

(सितारऽक इल्लुक आ मध्यम स्वर। बीच-बीचमे गंभीर कम्पन। वातावरणऽक शान्त आ सरल उदासीनता के चीरइत संगीत। आ सजाओल स्वरमे स्त्री-कण्ठ सँ—‘जय जय भैरवि असुर भयाओनि, पसुपति भामिनि माया।’ गीत आ संगीतऽक शब्द आ ध्वनि क्रमिक रूपेँ मन्द होइत-होइत समाप्त भऽ जाइत।)

कथा-वाचक—‘जय जय भैरवि असुर भयाओनि, पसुपति भामिनि माया’ऽक भक्तिमय पदऽक गायक महाकवि विद्यापति अप्पन गीतसँ सँउसे देश केँ एकता आ प्रेमऽक सूत्रसे बन्हने छथि। काव्यऽक एहि कड़ीकेँ आजुक वैज्ञानिक युगऽक कोनो दण्ड, कोनो अस्त्र, कोनो हथउड़ी नई तोड़ि सकइत छि। असामऽक चाह-बगानऽक मजूर-मजूरनी, वंगदेशऽक ग्राम-ग्रामऽक युवतिगण, बिहार आ उत्तर प्रदेशऽक प्रत्येक बालक-वृद्ध-स्त्री विद्यापतिऽक मोहक कविताऽक स्वरेँ जीवन-यापन करइत छथि। विद्यापति एक पद गाबि-गाबि पानि भरइत छथि, जाँत पिसइत छथि, आँगन नीपइत छथि, अहिपनऽक फूल-फाँत बिबइत छथि, गाछीऽक रखबारी करइत छथि, दिन-रातुक सभ काज करइत छथि। आ मिथिलामे जे विद्यापतिऽक काव्यऽक स्थान अछि, तकर तऽ गप्पे व्यर्थि। ओ तऽ महाकविकऽक स्वप्नऽक स्वर्ण देश, महाकविक ताजमहल अछि ए।

आइ विद्यापति नई छथि, हुनकर काव्यक आत्मा महाराज शिवसिंह आ महारानी लखिमा ठकुराइन नई छथि, ओ वन-विटप, कुंज-कानन, ओ सरिताऽक निर्मल धार, आम्र-उपवनमे कोकिलाऽक कल-कूजन, ओ वसन्त किछुओ-टा नई अछि। तइओ, विद्यापतिऽक पदमे भक्ति, वैराग्य-दर्शन, श्रृंगार, वात्सल्य आ स्नेहऽक ओ स्वर्णिम-युग जीविते अछि, ओ सभटा

क्या जावत अछि, ज विद्यापतिऽक कविताऽक आधार - स्तम्भ छल । जावत धरि विद्यापतिऽक काव्य - धारा अछि, मैथिली - भाषा अछि, हम ओहि पुरातन युग कें नइ बिसरि सकइत छी, ओहि वर्ष कें नइ बिसरि सकइत छी, ओहि दिन कें नइ बिसरि सकइत छी, ओहि दिन कें... जहिआ एक दिन..... जहिआ एक दिन.....

(पुनः संगीतऽक स्वरमे वृद्ध होइत अछि— 'जय जय भैरवि असुर भया-ओनि, पसुपति भामिनि माया' । गीतऽक दुइ-तीन पदऽक पुरइत-पुरइत संगीत मध्यम होमऽ लगइत' छि आ गीतऽक स्वर कें विदीर्ण करइत पुरुष - कण्ठऽक शब्द बहराइत छइक)

शिवसिंह—महाकवि, सुनइत छिअइ ? हवेलीऽ के बेटीगण अहाँक गीत गाबि रहल छथि ।

विद्यापति—सुनि रहल छी, महाराज !

शिवसिंह—अहाँ हमरा महाराज किअएक कहइत छी ? हम तऽ अहाँक मित्र थिकहुँ, महाकवि ? हम'- अहाँ तऽ बाल्यावस्थामे संगहि - संग पढ़ल आ खेलाएल छी ? हम तऽ अहाँक शिव थिकहुँ, महाराज तऽ कोनो तरहें नइ छी ?

लखिमा—(निर्भर सन खिल - खिल हँसी हँसइत) तखन अहाँ हिनका 'महाकवि' किअएक कहइत छिअइन ? इहो तऽ अहाँक मित्रे छथि, महाकवि नइ छथि ?

विद्यापति—महारानी, जीवनऽक हेतु जेना कविता आवश्यक अछि, तहिना ई सभ व्यवहारिकता सेहो आवश्यके थीक । शिव हमर मित्र छथि तऽ हमर महाराजो थिकाह । हम हुनकर बाल - संगी छी, तऽ हुनकर महाकविओ थिकहुँ ! जँ काव्यऽक बिना हमर कोनो अस्तित्व नइ, तऽ राज्यऽक बिना हिनको अस्तित्व नइ छइन, महारानी !

लखिमा—(हँसिते-हँसि) ई तऽ महाराज छथि, मुदा अहाँ महाकवि कोना भऽ गेलहुँ ? अहाँ तऽ वसन्तऽक पुष्प पर, धारमे स्नान करइत सुन्दरीऽक समूह पर, विरह - वेदना विदग्धा राधिका पर, मुरारीऽक मोहक मुरलिका पर, शृंगार आ अभिसार पर गीत - रचना करइत छी । तखन अहाँ

महाकवि कोन तरहें भऽ गेलहुँ ? महाकवि तऽ ओ महर्षिगण छथि, जे वेद आ पुराण आ उपनिषदऽक रचना कएने छथि । जे शाश्वत छथि, अनादि, अखंड, अभेद, अज्ञात थिक, जे सत्य थिक अहूँ तकरे गीत किअएक नई लिखइत छी, महाकवि ?

विद्यापति—महारानी ! की हमर काव्य सत्य नई थीक ? की हमर पदमे सित्त सौन्दर्य सत्य नई थीक ? की हमर पुष्प - तन, हमर वसन्त, शृंगार, हमर भक्ति, हमर उपासना, हमर प्रिय - मिलन आकाँक्षा, हमर राधा ओ हमर कृष्ण सत्य आ शाश्वत नई थीक ?

शिवसिंह—आ महारानी ! की प्रत्येक युगमे स्त्री पुरुष सँ, पुरुष स्त्री सँ, स्नेह नई करइत रहत ? जँ वेद सत्य, पुराण आ नीति-शास्त्र सत्य तऽ की हमर अहाँक हृदयमे उठइत काव्य आ संगीत आ सिनेहऽक धारा सत्य नई थीक ?

लखिमा—किअएक नई महाराज ! अहाँ अप्पन महाकविऽक प्रशंसा किअएक नई करब !

विद्यापति—प्रशंसाऽक गप्प नई छइक, महारानी ! सत्य ई थिक जे हम अपना मोनमे जे सद्यः अनुभव करइत छी, तही अनुभवकेँ अप्पन काव्यमे प्रवाहित करइत छी । हमरा विश्व आ प्रकृतिऽक प्रत्येक सुन्दर वस्तु सँ आन्तरिक सिनेह अछि, तई हम तकरे पद रचै छी । भगवती हमरा जीबइ क हेतु, संवर्षऽक हेतु, कर्त्तव्य-पालनऽक हेतु प्रेरणा दइत छथि, तई हम भगवतीऽक पूजा-अर्चना करइत छी ! दर्शन आ वेदान्तऽक शुष्क सूत्र कविताऽक कोमल कल्पनामे ढारव हमरा नीक नई लगइत अछि, महारानी !

शिव सिंह—परंच महाकवि ! (हँसइत छथि) अहाँ अपना गीत सँ महलऽक सभ दास - दासी, भृत्य आ चेरिकेँ बिगाड़ि देने छी । जत्तऽ सूनू विद्यापतिएक पद, जत्त देखू तकरे ठोर पर 'उठु - उठु सुन्नरि, जाइछी विदेस' ! अहाँ अपना काव्य सँ सउँसे देसकेँ बताह कऽ देने छी, महाकवि ! एह, जँ हमरा अहाँक स्वर, अहाँक संगीत आ अहाँक रचना - चातुर्य भेटि जइते.....

विद्यापति—(बिच्चे सँ गप्पकेँ लोकइत) तऽ अहूँ हमरे जकाँ गामे-गाम, वने - वन, धारे - धार प्रकृतिऽक छविकेँ अप्पन आँखिमे आ हृदयमे

आ काव्यमे सूत्रवद्ध करइक हेतु छिछिआएल फिरतहूँ.....(लखिमा, शिव-
सिंह आ विद्यापति तीनू एकके संगे ठठाकऽ हँसऽ लगइत छथि । थड़ी काल
धरि हँसिते रहइत छथि ।)

लखिमा—जाऽ, कत्तेक देरी भऽ गेल । नउँड़ी पान दऽ गेल छलीह !
(पनबट्टा उठाए) लिअऽ महाराज ! लिअऽ महाकवि ! दक्षिणी
सेहो लेल जाए, आइए तऽ वाराणसी सँऽ कीनि कऽ अश्ववाहक अनने
अछि !

विद्यापति—(गंभीर होइत) महाराज, काल्हिएसँऽ सुल्तानऽक दूत
आबिकऽ दुआर लग बइसल अछि । ओकरा तऽ कोनों उत्तर देबऽ पड़वे
करत ! अपने कोनो निश्चय कएलहूँ ?

शिवसिंह—एखन धरि तऽ किछु नईँ बिचारि सकल छी । वसन्तोत्सवऽक
कारणें तीन - चारि रातिसँऽ जगले छी । रातिओ तऽ दरबारेमे बड़ी काल
धरि मल्लिकाक नृत्य होइत रहल, से.....

लखिमा—हमरा बुझने तऽ दुइए-टा मार्ग अछि । पहिनिहि जकाँ
सुल्तानकेँ राजकीय कर देल जाए, वा नईँ तऽ दूतकेँ कहि देल जाए
‘सूच्याग्रे न दातव्यम्, विना युद्धेन केशवऽ !’ की औ महाकवि ?

विद्यापति—मार्ग तऽ सत्ये एएह टा अछि । मुदा, कोन मार्ग नीतिपूर्ण
थीक, से तऽ महाराजे कहताह । हमरा बुझने, एखन किछु दिन अओर
जन-बल-संग्रह कएल जाए । जखन सुल्तानसँऽ युद्ध करबाक पूर्ण शक्ति भऽ
जाय, तखनिहि.....

लखिमा—(रोषपूर्ण स्वरें) तऽ अहाँक विचारें, महाकवि ! एखन कर
दऽ देल जाइ ? तऽ की पराजयऽक भय सँऽ, मृदुऽक भय सँऽ अन्याय सहइत
रहब ? असलका राजा तऽ कराधिपति होइत अछि । आ जखन कर वएह
सुल्तान पवइत रहत तऽ हमर महाराज की लऽ कऽ प्रजाऽक सुरक्षा आ सेवा
करताह ?

विद्यापति—प्रजा-जनऽक सुरक्षा आ सेवा राजाऽक प्रथम कर्तव्य थीक ।
मुदा, असमय युद्धऽक ज्वालामे अपनाकेँ, अपन सेनाकेँ सुझाह कऽ देब
कतबा धरि उचित हएत, से हम नईँ कहि सकइत छी ।

लखिमा—महाकाव, सत्यऽक हतु, कतव्यपूतक हतु समय-असमयऽक विचार नई कएल जाइत छइक । कविशेखर ! ई बदरिकाश्रमऽक यात्राऽक विषय नई थीक जे दीन ताकल जाएत, ई थीक अन्यायऽक विरुद्ध रक्त-रंजित तरुआरि लऽ कऽ प्रस्तुत होएबाक विषय ! आ जवन पाँच पाण्डव मिलिकऽ असंख्य कौरव-सेनाऽक विरुद्ध पाञ्चजन्य फूँकि देलइन, तऽ हमर महाराजो एसकर नई छथि, सबँसे देशऽक व्यक्ति - व्यक्ति हिनक सेना बनि जएतइन !

शिवसिंह—(अकस्मातें जोर सँ) अहाँ सत्य कहइत छी महारानी ! हम जाकऽ यवन-दूत सँ कहि दइत छी, आब सुल्तानकेँ राजकीय कर नई जएतनि ! (शिवसिंहऽक अन्तःपुर सऽ बहार जएबाक पद-चाप ।)

विद्यापति—महारानी. अपने ई की केलिअइक ?

लखिमा—सएह तऽ हम अहाँसँ पूछइक लेल छलहुँ जे एना किअएक भेल !

विद्यापति—चमा कएल जाओ, महारानी ! अहाँक कटाक्ष नई बूझि सकलहुँ

लखिमा—बुझबो जुनि करू !

विद्यापति—से किअएक ?

लखिमा—किअएक तऽ अहाँ कवि छी । अहाँ कि जाने गेलिअइक जे अहाँक काव्य सँ ककरा मोनमे कोन भाव उठइत छइक । महाराजकेँ तऽ राज-काजसँ पलस्वतिए नई भेटइत छनि । अहूँकेँ सरिताऽक तट सँ, संगीतऽक गोष्ठा सँ, दरबारऽक मन्त्रणा सँ, नृत्यकलाप्रवीणा नर्तकी सभऽक रसिकता सँ, साहित्य आ दर्शनऽक पंडित सभऽक शास्त्रार्थ सँ अवकाशे नई भेटइत अछि । अहाँ की बुझबइक जे हमरा मोनमे कोन धधरा, कोन ज्वाला जरि रहल अछि ।

विद्यापति—(तिक्त स्वरमे) महारानी, अहाँक मोनऽक विरह-व्यथिता राधाकेँ किओ नई चीन्हि सकइत छी तऽ एहि पाप सँ सुल्तान केँ कर नई देबाक समस्याऽक कोन सम्बन्ध छइक ?

लखिमा—(मुस्की दइत) ई गप्प अहाँ नई बूझि सकबइ ओ कवीश्वर ! अहाँ तऽ पाथरऽक मूर्ति छी । ई गप्प तऽ हमहीं-टा बुझइत छिअइक !

(खिलाखिला कऽ हसइत छथि) महर्षि नारद छीके पापऽक घइल कहने छथीन, कवि-शेखर ! से अहाँ केँ बूझल नई अछि ?

विद्यापति—(क्रोध सँ मूर-भ्रमान होइत) तऽ, की अहाँ महाराजकेँ युद्ध मे पठा कऽ स्वयं अभिसारिका बनऽ चाहइत छी ? की अहाँक मोन मे एतेक पाप पइसि गेल अछि ? महारानी, हमरा पर नई, अपना पर नई, महाराजो पर नई, तऽ अप्पन प्रजा पर तऽ दया करिअर ? देवि, हम हाथ पसारि कऽ भीख माँगइत छी.....

शिवसिंह—(अकस्मात् सतेज गतिएँ अबइत) नई, महाकवि, आब भित्ता माँगबाक कोनो आवश्यकता नई रहल ! हम अप्पन अंतिम निश्चय कऽ लेलहुँ । आब सुल्तान सँ युद्ध होएवे करत । अन्तिम युद्ध होएत । हम विजय प्राप्त कऽ कऽ घूरब अथवा समराग्नि मे अप्पन तुच्छ प्राणऽक आहुति दय देब !

विद्यापति—(करुण स्वरें) महाराज !

शिवसिंह—आइ महाराज जुनि कहू, विद्यापति ! आइ हमरा महाराज जुनि कहू !

लखिमा—महाराज, हमरे गप्पऽक कारणेँ अहाँ एतेक उत्तेजित भऽ गेल छी ! हमरा क्षमा करू, प्राणेश्वर ! हम एको छन अहाँ सँ बिलग नई भऽ सकइत छी ! (आवेग सँ कण्ठ अवरुद्ध भऽ जाइत छैन आ कानऽ लगइत छथि)

शिवसिंह—चलू, विद्यापति, आइ मन्त्रालो-गृह मे भोजन करब । अन्तःपुर मे नई भोजन करब ! स्त्रीऽक कोन विश्वास ! महर्षि नारद कहने छथीन जे स्त्री पापक घइल होइत अछि ।

विद्यापति—(खिन्न स्वर सँ) चलू महाराज !

(विद्यापति आ शिवसिंहऽक जएबाक पद-ध्वनि । लखिमाऽक जोर-जोर सँ कनकाक स्वर कनी काल धरि सुनि पड़ैछ)

द्वितीय दृश्य

(महलऽक वातायनपर बइसलि महारानी लखिमा ठकुराइन मद्धिम स्वरें विद्यापतिऽक पद गाबि रहलि छथि—‘सखि हे, हमर दुखक नहि आर’ !)

लाखमा—महाराज (प्रकोष्ठ में प्रवेश करइत भारा आ बाभल कण्ड तऽ)
विद्यापति—

महारानी, अहाँ किछु सुनलिअइक ?

लाखमा—(गीत रोकि कऽ) आव सुनबाक लेल बचबे की कएल अछि ? किछु सुनबाक हेतु जीबि रहलि छी, इएह की कनिँ आश्चर्यक विषय थीक ? तइयो कहू कविशेखर ! की संवाद थीक ?

विद्यापति—युद्ध-स्थल सँ घूरि कऽ एकटा सैनिक एखनहि आएल अछि । ओ महाराजऽक वर्णन करइतछि । कहइत छल, महाराज गांडीवधारी अर्जुन आ वज्रपाणि इन्द्र जकाँ युद्ध कएलनि । सुल्तानऽक हाथीक निकट पहुँचि कऽ कृपाणऽक एक्के प्रहार सँ सुल्तानऽक शिरस्त्राण काटि खसओलनि । मुदा, तुरन्ते हाथी सँ कूदि कऽ सुल्तान महाराज सँ प्राणऽक भिन्ना माँगऽ लगलइन आ महाराज ओकरा जिविते छोड़ि देलथिन !

लाखमा—(उत्सुक भऽ कऽ) तऽ की हमर महाराज युद्ध मे विजय प्राप्त कएलनि ?

विद्यापति—विजय तऽ मात्र एकटा पइघ भ्रम थीक । महारानी ! युद्धमे ककरो विजय नई होइत छइक । दुनू पक्ष हारिते अछि । हँ, हारबाक मात्रामे किछु भेद अबस्से होइत छइक ।

लाखमा—व्यंग्य जुनि करू, महाकवि ! सत्त गप्प कहू ।

विद्यापति—सत्य अहाँ केँ सहा नई होएत, महारानी ! सत्य बडु कडु होइत छइक !

लाखमा—हम हुनक मृत्युऽक संवाद सहन कऽ सकइत छी । अहाँ कहबो तऽ करू, महाराज कऽ छथि ?

विद्यापति—मृत्युओ मात्र छलना थीक, महारानी ! मृत्यु केवल शरीरऽक होइतछि, आत्माऽक नई, कीर्तिऽक नई, 'शिव'ऽक नई, 'विद्या'ऽक नई

लाखमा—आइ अहाँ एहेन गप्प किअएक करइत छी, कवि-शेखर ? शुद्ध-शुद्ध किअएक नई कहइत छी ? कि हमरा असहाय बूझि ई दुख दऽ रहल छी ?

विद्यापति—महारानी, स्त्री तऽ कोनो स्थिति मे असहाय नई भऽ सकइतछि । स्त्री तऽ भगवती दुर्गा होइतछि, शक्तिऽक प्रतिरूपा होइतछि

लाखमा—(उठि कऽ विद्यापतिऽक निकट अबइत) तखन कहू ने ? हमर प्राणेश्वर केँ, मिथिला-नरेश केँ की भेलइन ?

विद्यापति—(शान्त स्वरे) महाराज युद्ध करइत-करइत हिमालयऽक उपत्यकाऽक जंगल मे चल गेलाह । सुल्तानऽक सैनिकगण ओ महाराजऽक अनुचर-गण युद्ध-भाव बिसरि कऽ हुनका प्रत्येक कन्दरामे, प्रत्येक काननमे ताकलकइन, किन्तु ओ नई भेटलाह

लखिमा—(उत्तेजित भऽ कऽ) महाकवि, तखन तऽ हमर सौभाग्य-चिन्ह मेटा गेल ? तखन तऽ मिथिलामे सूर्यास्त भऽ गेल ? (कानइत-कानइत) हे भगवतो, हे काली ! हे दुर्गा ! एहेन कोना भेल ? आव प्राण कोना बाँचत ? आव जीवनऽक पहाड़ सन दिन आ समुद्र सन राति कोना बीतत ? महाकवि ! महाकवि !

(कानइत आ चिचिआइत छथि)

विद्यापति—(गंभीर भऽ कऽ) हमरा एहि दिनुक आशंका पहिनहि सऽ छल ! हमरा बुझले छल जे अहाँक ओ शब्द-बाण.....

लखिमा—अहूँ हमरे दोष दइत छी ?

विद्यापति—हम किनको दोष नई दइत छी, महारानी ! केवल एतदे विचारइत छी जे की ई हमरे प्रेम आ श्रृंगारऽक पदावलीऽक फल थीक ! की हमही अप्पन गीत सँ मिथिला-भरिकेँ भीरु बनाऽ देने छी ?

लखिमा—नई, ई अहाँक गीतऽक अपराध नई थीक ! अहाँक गीत तऽ मात्र हमरे टा विह्वल कएने अछि !

विद्यापति—महारानी ! अहाँ हमरा परितोष आ सान्त्वना दइत छी ! हम मिथिलाऽक गाम - गाममे बाजल जाइत्ती भाषामे, अही दुआरे अप्पन काव्य लिखलहुँ जे संस्कृत - साहित्य सँ आ वेदान्तऽक नीरस सूत्रसँ देसऽक जीवन शुष्क भेल चल जाइत छल । चारु कात कृत्रिमता भरि गेल छल । मानव - जीवन मे निष्कलंक सौन्दर्यऽक रस प्रवाहित करवाक हेतुएँ हम काव्य-रचना कएलहुँ ! मुदा...मुदा, भविष्य हमरे दोष देत ! भविष्यऽक लोक इएह कहत जे हमही वीर-प्रसू जन्मभूमिकेँ श्रृंगारिकता आ अकर्मण्यता सँ भरि देलिअइक !

लखिमा—महाकवि, आव हमर की हएत ?

विद्यापति—आव अहाँ एत, पुरादित्यऽक राजमहलमे नई रहू, महारानी ! संपूर्ण मिथिला अहाँक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि । अहाँ स्वयं अप्पन

राज्य सम्हालू । देशऽक नव - निर्माण करू । ध्वस्त व्यवस्थाऽक पुनरोत्थान करू । विद्यापतिऽक काव्यके विसरि राज - काज मे मोन दिअऽ महारानी !

लखिमा—नई ! से हमरा सँऽ नई होएत !

विद्यापति—हम तऽ, महारानी, आब अपना गाम जाइत छी । एको क्षण अहाँक संग नई रहि सकब । हमरा सँऽ सहल नई जाएत जे समाज ई कहय जे महाराजऽक अवसानऽक पश्चात् हुनकर महाकवि, हुनकर महा-मन्त्री, हुनकर बाल-संगी

लखिमा—अहाँ के समाजऽक भय होइतछि ?

विद्यापति—समाजसँ बेसी हमरा अप्पन भय होइतछि ! अहाँ युवती छी, परम सुन्दरी छी, भावुक छी आ एसकरि छी । अहाँक संग हम नई रहि सकब, महारानी !

लखिमा—(गंभीरता पूर्वक) जँ हम संग रहइक हेतु अहाँ के विवश करी, तखन ?

विद्यापति—तखनहुँ हम नई रहि सकब ! महारानी, कबि तऽ वेगवान निर्भर होइतछि ! आ निर्भरकेँ अँजुरमे बान्हि कऽ नई राखल जा सकइतछि !

लखिमा—अहाँ अप्पन महारानीऽक अपमान कऽ रहल छी, कविशेखर !

विद्यापति—हम सत्ते कहि रहल छी, महारानी ! आ सत्य सँऽ ककरो अपमान नई होइत छइक ! आब हम जा रहल छी, महारानी ! कबिऽक आशीर्वाद ग्रहण करू !!

(स्थिर डेगें विद्यापतिऽक प्स्थान ! आ, तखन महारानीऽक जोर-जोर सँऽ कानव !)

लखिमा—(कनितहि) चल जाउ ! सभ गोटे चल जाउ ! हमरा किनको आवश्यकता नई अछि ! मझकवि कहने छथि जे स्त्री भगवतोऽक अंश होइतछि ! हमहुँ दुगा वनेब ! हमहुँ कृपाण आ त्रिशूल धारण करब ! (अकस्मात् हँसइत छथि) कृष्णऽक मुरली केँ हम तोड़ि देब ! हम राधा नई छी ! हम राधा नई छी ! हम भगवती दुर्गा छी, सिंहवाहिनी छी !

(जोर - जोर सँ हँसऽ लगइत छथि)

तृतीय दृश्य

(अपना आँगनमे खाट पर बइसल विद्यापति नहुँए - नहुँए स्वरमे गाबि रहल छथि ।)

विद्यापति—कामिनि करए सनाने !.....कामिनि !.....कामिनि करए सनाने...कामिनि ! कामिनि करए सनाने ! हेरितहिं हृदय इनए पंचवाने... कामिनि !

कवि-पत्नी—(घर सँ बाहर होइति) ई पुरान गीत किअएक गाबि रहल छी ? ई पद तऽ गाम मे सभकेँ स्मरण छइक !

विद्यापति—(दीर्घ - श्वाँस लइत) एहि पद मे अतीतऽक एकटा बड़ पइघ स्मृति गँथल अछि । तइ स्मरण कऽ रहल छलहुँ ।

कवि-पत्नी—से की ?

विद्यापति—मन्दाकिनी ! एहि प्रश्नऽक उत्तर बड़ पइघ छइक । जहिया पहिल बेर महाराज शिवसिंह दिल्लीऽक राज-कर देव रोकि देलथिन, तऽ षड़यन्त्र सँ हुनका दिल्ली बजा कऽ सुल्तान नजरबन्द कऽ देलकनि ।

कवि-पत्नी—तखन की भेलइक ?

विद्यापति—तखन होएतइक की ! प्रजा हाहाकार करऽ लागलि । महारानी अन्न - जल त्यागि देलइनि । सउँसे देस मे श्मशानऽक शान्ति । एहेना स्थिति मे हम प्रतिज्ञा कएलहुँ जे दिल्ली जाए महाराज केँ छोड़ा आनब !

कवि-पत्नी—तऽ महाराजकेँ कोना छोड़ओलिअनि ?

विद्यापति—हम दिल्ली गेलहुँ आ कतेक - कतेक कठिनता सँ सुल्तानऽक सोझा मे पहुँचलहुँ । सुल्तान महलऽक उपवन मे विश्राम कऽ रहल छल । हमरा सँ पुछलक, पुछलक जे.....

(अकस्मात जोर सँ संगीतऽक भन-भन शब्द गुंजित भऽ जाइत अछि । फेर सभ शान्त)

सुल्तान—कौन हो तुम ? किसलिए मेरे सामने आने की जुरत की है ?

विद्यापति—हम महाराज शिवसिंहऽक कवि छी । आपन कविस्व—चातुरी सँ अहाँक मोन प्रसन्न कऽ, हुनका कोरा-मुक्त कराबऽ आएल छी !

सुल्तान—तो तुम शायर हो ? मुझे भी शायरी से शौक है ! सुनाओ कोई जानदार चीज ! (सुल्तान खिलखिला कऽ हँसइतछि !)

विद्यापति—सुल्तान ! हम कवि छी, आ अदृश्यऽक, जे आँखि सँ नई देखि रहल छी, तकरो वर्णन कऽ सकइत छी !

सुल्तान—(प्रसन्न होइत) बहुत खूब ! बहुत खूब ! सब तो तुम शायर ही नहीं, नैजूमी भी हो, फैलसूफ भी हो ! क्यों ? (फेर जोर सँड चिकरइत) गुलनार ! ओ गुलनार ! देख, हरम के दरवाजे खोल, मगर, पहले आकर इस शायर की आँखों पर मजबूत पट्टियाँ बाँध दे ! देखूँ, ये मिथिला का शायर अपने हुनर को कैसे पेश करता है !

(विभिन्न पद-चापऽक ध्वनि । केबाड़ आदि फुजबाक आ बन्द होएबाक शब्द ।)

सुल्तान—बस हो गया ! अब ज्यादा जोर से पट्टी बाँधने की जरूरत नहीं है ।

(तीन-चारि स्त्री-कण्ठऽक हास्यऽक यौवनमय स्वर-लहरी । जलऽक धारा से स्नान करबाक छप्-छप्-छप् शब्द जे क्रमशः ध्वनित होइते रहइत छइक ।)

सुल्तान—मिथिला के शायर ! अब सुनाओ अपनी शायरी, अपने फन का कमाल ! हरम के दरवाजे खुले हुए हैं ! अपने कलाम से बताओ कि अन्दर क्या हो रहा है ।

विद्यापति—(संगीतऽक स्वर मे)

कामिनि करए सनाने
हेरितहिं हृदय हनए पँच-बाने
चिकुर गूए जल-धारा
जनि मुख-ससि डरें रोअए अँधरा
कुंचजुग चारु चकेबा
निबऽ कुल मिलत आनि कोन देवा
तैं संकोचे भुज-पासे
बाँधि भरिअ उड़ि जाएत अकासे !

(पार्श्व सँड पुनः सतेज आ सबेग बाद्यऽक ध्वनि, जइ मे क्रमिक रूपेँ ११ त बिलीन भऽ जाइतछि !)

कवि-पत्नी—तऽ की अही गीत सँड प्रसन्न भऽ कऽ सुल्तान महाराजकेँ मुक्त कऽ देखकनि ?

विद्यापति—ह, मन्दाकिनी ! ऐसी पदऽक कारणें हम महाराजकेँ ओहि बेर राजधानी घुरा कऽ आनि सकलिन ! तइँ, आव जखन कूँ ई गीत मोन पड़तछि तऽ आँखि सँ जलऽक धार प्रवाहित होमऽ लागइतछि । आव ओ सभ दिन कहाँ अछि ! राजधानीऽक ओ वैभव-बिलास, संगीत—काव्यऽक ओ अपूर्व सम्मेलन.....(दीर्घ-निश्वास) ।

चारिम दृश्य

(वृद्ध आ अस्वस्थ विद्यापति गंगा-लाभऽक अन्तिम प्रयाण मे जा रहल छथि । मार्गहि मे एकटा वृत्तऽक नीचाँ ओछाओन पर बइसल विश्राम कऽ रहल छथि । रहि - रहि कऽ हुनकर ओकासी करव शान्त वातावरण मे भरि जाइत छइन । संग मे थिकथिन पत्नी मन्दाकिनी ।)

विद्यापति—(ओकासीऽक स्वर) आव गंगा कतेक दूर छथि ?

कवि-पत्नी—(अधोर स्वरें) स्वामी, ऐखन तऽ आधो नइँ पहुँचल छी । ऐखन गंगा बड़ी दूर छथि । मुदा, अपने विचलित किअएक होइत छी । गंगा-स्तान सँऽ अपने स्वस्थ भऽ जाएब !

विद्यापति—हँसी किअएक करइत छी, मन्दाकिनी ? जीवन भरि तऽ अहिना अपना शरीर आ आत्माकेँ ठकइत रहल छी ! आव तऽ केवल इएइ इच्छा अछि जे शान्ति सँऽ मात्रि गंगाऽक कोरा मे सूति रही ! (बड़ी काल धरि ओकासीक स्वर !)

कवि-पत्नी—एहेन गप्प जुनि करू, स्वामी !

(पार्श्व सँऽ रथऽक खड़ - खड़वाक स्वर ! जोर सँ रथऽक दौड़ल अएवाक शब्द !)

विद्यापति—मन्दा ! ई पाछू सँऽ रथादिक दउगिक शब्द किअएक प्रतिध्वनित भऽ रहल अछि ?

कवि-पत्नी—कोनो पथिकऽक रथ हेतइक, स्वामी !

विद्यापति—(जोर सँऽ) नइँ, नइँ ! अहाँ सत्य नइँ कहि रहलि छी । (रथऽक स्वर आर सतेज आ स्पष्ट होइतछि) ई तऽ महारानीऽक रथऽक शब्द थीक । महारानी लखिमा आवि रहलि छथि, मन्दा ! आन किओ नइँ, महारानिए थिकी !

(रथऽक रुकनाइ आ ककरो दउगिकऽ अएवाक शब्द !)

लखिमा—(दूरे सँऽ बजइत अबइत छथि) हँऽ महाकवि ! हमही थिकहुँ ! हम लखिमा थिकहुँ, महाकवि !

विद्यापति—(आह्लादित भऽ) आशावाद भाहभाभाय ! मुदा, अपन किअएक कष्ट कएलहुँ ? किअएक अएलहुँ ?

लखिमा—(कनइति सन) महाकवि, कोनो भक्त अप्पन देवताऽक दर्शन करऽ आवय तऽ एकरा कष्ट कहतइक ? अहाँ हमरा पतिव्रता सँऽ बचओलहुँ, अहाँ हमर धर्मऽक रक्षा कएने छी ! अहाँ हमर उपास्यदेव छी, महाकवि ! तइओ की हमरा अहाँक निकट अएवाक अधिकार नई ?

विद्यापति—(बाकेल कएठें) नई महारानी, अहाँकेँ एतबो अधिकार नई अछि । अहाँकेँ अप्पन मर्यादा आ राजकुलऽक सीमा नई तोड़बाक चाही ! महारानी, सीमा आ बन्धन तऽ जीवनऽक शृंगार थीक ! (उकासी करबाक स्वर)

लखिमा—से तऽ बूझल । मुदा, महा-प्रयाणऽक एतेक शीघ्र कोन आवश्यकता अपनेकेँ पड़ि गेल ? जीवनऽक भार नई सँभरि सकल की ?

विद्यापति—(सुखाएल हँसी मे) जीवन हमरा कहिओ भार नई भेल महारानी, किन्तु आब सत्ते अन्त समय आवि गेल अछि !

कवि-पत्नी—महारानी, अहाँक जोकर तऽ एतऽ आसन नई अछि । तथापि, बइसि जाउ ने ? महाकवि बहु थाकि गेल छथि !

विद्यापति—नई मन्दाकिनी, थाकल नई छी !

लखिमा—कविरानी, हम तऽ बइस आएल छी नई ! महाकविऽक चरण-स्पर्श करऽ आएलि छी !

विद्यापति—एखनहुँ अहाँक ओ हास्य नइ गेल अछि ।

लखिमा—यएह हास्य-व्यंग्य तऽ जीवनऽक मात्र लक्षण थीक, महाकवि ! ओना तऽ हम मरिऐ चुकल छी । आ, आब जिविओ कऽ कोन लाभ ? महाराजऽक कोनो थाह नइ, कत्त गेलाह, की भेलइन ! (फफकि-फफकि कऽ कानऽ लगइति छथि ।) ओ आइ अहूँ हमरा सभ सऽ विदा भऽ रहल छी । तखन जीवनऽक की अर्थ ? (कानइति छथि)

कवि-पत्नी—धैर्यऽक बान्ह नई तोड़, महारानी !

लखिमा—नई, कविरानी ! कनइक इच्छा तऽ नई होइत'छि । मुदा, मोन पर तऽ कोनो अंकुशऽक बस नई चलइत छइक !

विद्यापति—(दीर्घ-श्वास लइत) सत्य कहइत छी, महारानी ! मोनपर कोनो अंकुश नई चलइत छइक । किन्तु...किन्तु.....महारानी, आब गंगा कतेक दूर छथिन ?

लखिमा—गंगा तऽ बहुत दूर छथि, कविशेखर ! मुदा हम रथ अनने छी । रथ सँऽ बड़ शीघ्रे पहुँच जाएब ।

विद्यापति—नई, महारानी ! आव हम एतऽ सँ एको डेग आगू नई जाएब ! आइ भक्त आ भगवती मे युद्ध होएत !

कवि-पत्नी—की कहि रहल वार्म ?

विद्यापति—(गंभीर स्वरें) यएह जे आव हम आगू नई जाएब । आव गंगा स्वयं एहिठाम अएतीह ! हम हुनकर पुत्र भऽ कऽ एतेक दूर अएलहुँ तऽ की हमर माता एतेक कष्ट नई करतीह ? हुनको आवऽ पढ़तइन, मन्दाकिनी !

कवि-पत्नी—माताऽक परीक्षा लेबाक इच्छा अछि ?

विद्यापति—नई, नई ! हम तऽ स्वयं अप्पन मातृ-स्नेहऽक परीक्षा देबऽ चाहइत छी ! माय की हमर एतबो इच्छाऽक पूर्ति नई करतीह ? हमर अनुरोध स्वीकार नई करतीह ? माँ ! मातरि गंगे ! की हमर ई आकाँक्षा पूर्ण नई होएत ?

(पार्श्व सँऽ 'कत सुख सार पोओल तुअ तोरे'ऽक मधुर संगीत क्रमशः उठइतछि । आ बहुएँ ' नहुएँ तेज भेल जाइतछि । पुनः मन्द भऽ जाइतछि !)

लखिमा—अहाँ एतेक विह्वल जुनि होउ, महाकवि ! जाहवो अपने क ई इच्छा अवश्य पूर्ण कय देतीह !

विद्यापति—कतेक राति बीतल हेतइक, महारानी ?

लखिमा—एखन तऽ साँझे भेल छइक !

विद्यापति—नई, लखिमा ! राति आव समाप्त भऽ रहल अछि । पूर्वऽक अकासऽक गर्भ मे बालारूप हँसि रहल छथि । सरोवर मे नील-पीत-श्याम-श्वेत कमलिनीऽक समूह खिल-खिल कऽ रहल अछि । नूतन जीवनऽक प्रभात भऽ रहल छइक ! जतऽ ने कोनो दुख छइक, ने सुख; ने मिलन छइक, ने विरह; ने आत्मा, ने ब्रह्म.....मात्र निरानंद मात्र शान्ति, जयति जय सर्व मंगला शान्ति !

कवि - पत्नी—(नहुएँ सँ लखिमाऽक कान मे) महारानी, आव अन्तिम घड़ी आवि रहल अछि ! (कानऽ लगइति छथि ।)

विद्यापति—(भाव-विभोर स्वरें) की कहलहुँ, मन्दा ! किनकर अन्तिम प्रहर आवि गेल छइन ? (हँसइत छथि) सत्ये तऽ कहि रहल छी अहाँ ! सत्तो, दुख - सुखऽक अंतिम समय, आवि गेल अछि । अंतिम समय...मुदा, अंतिम समय मे गंगा-भगवती नई आएलि छथि ?

लखिमा—अहाँ शान्त रहू, महाकवि ! प्रकृतिऽक कोनो शक्ति माय के पुत्रऽक समीप आएबा से नई रोकि सकइत अछि !

विद्यापति—लखिमा महारानी !

लखिमा—कहू महाकवि !

विद्यापति—गंगा - भगवती आबि रहल छथि लखिमा ! हम हुनक अबाध गतिऽक शब्द सुनि रहल छी ! आ, अहाँ किछु देखिओ रहल छी, लखिमा ?

लखिमा—नई महाकवि, किछुओ नई देखि रहल छी !

विद्यापति—पूर्वऽक क्षितिज दिस देखिअउ, महारानी हमर मित्र ठाढ़ छथि ! हमर महाराज शिवसिंह ठाढ़ छथि ! सूर्यक जाज्वल्यमान किरण - जाल स हुनकर स्वर्ण, किरोट चमकि रहल छइन ! ओ हँसि रहल छथि, आ हमरा बजा रहल छथि ! आब हमरा कोनो चिन्ता नई रहल ! कोनो टा दुख नई रहल ! गंगा-भगवती आबि रहल छथि, हमर मित्र प्रतीक्षा कऽ रहल छथि । आब तऽ समय आबिए गेल, लखिमा ! मन्दाकिनी !! (बड़ी काल धरि उकासी करैत छथि)

कवि - पत्नी—(जोर सँ चिचिआ कऽ) आँखि खोलू स्वामी ! देखिअउ तऽ ! भगवती गंगा कोना वेग सँ चल अबइत छथि, स्वामी आँखि फोलू,

विद्यापति—माता आबि गेलीह, लखिमा ?

(गंगाऽक धाराऽक कल - कल ध्वनि, जे अधिक तीव्र आ गर्जनमय होइत जाइत'छि । बिड़ड़ी, बिहाड़ि आ वर्षाऽक शब्द - वातास । बडु रौद्र गर्जन ।)

लखिमा—महाकवि, गंगा आबि गेलि छथि । आँखि फोलू, गंगा-जलऽक स्पर्श करू, कवि - शेखर ! (

विद्यापति—(नहुँए जोर सँ) 'कत सुख सार पाओल तुअ तीरे' ! 'कत सुख सारऽ.....'

(पार्श्व सँ 'कत सुख सार पाओल तुअ तीरे' ऽक समवेत आ संगीतमय ध्वनि स्पष्ट आ पुष्ट भऽ जाइत'छि । विद्यापतिऽक पद संपूर्ण गाओल जाइत'छि ।)

(पटाचेप)

Vidyapati Chair Endowment

[Bihar University]

१९५६ मध्य जे वैदेही समिति, दरभंगा द्वारा प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन आयोजित भेल छल ताहि अधिवेशनमे स्व० श्याम-नन्दन सहाय, उपकुलपति, बिहार विश्वविद्यालय घोषणा कैलन्हि जे विद्यापतिक स्मृति-रक्षार्थ सभसँ उत्तम स्मारक दरभंगा मध्यमे 'विद्यापति चेयर'क स्थापना हैत । एहि निमित्त १ लाख टाकाक योजना सेहो स्वीकृत भेल जाहिमे २५ हजार टाका विश्व-विद्यालय दिसि सँ देब सेहो स्वीकार कैलन्हि । ओहि समय किछु दानक घोषणा सेहो भेल जाहिमे १००१) टाका बाबू श्रीजगदीशनन्दन सिंहजी, मधुबनी ड्यौढ़ी मधुवनीक अपूर्व दान उल्लेखनीय अछि ।

विश्वविद्यालयक वर्तमान कुलपति डाक्टर श्रीदुखनराम 'विद्यापति चेयर'क योजनाकेँ सक्रिय रूप देवामे पूर्ण तत्पर छथि । तेँ महाकवि विद्यापतिक ई स्थायी कीर्ति निमित्त सभ उदार महानुभावसँ करवद्ध प्रार्थना अछि जे अपन दान निम्नस्थ पतासँ शीघ्र पठा देथि एवं हमरा सेहो सूचना देथि ।

रजिष्ट्रार, बिहार विश्वविद्यालय, पटना-४

एहि चेयरसँ दरभंगा मध्य मैथिली साहित्य ओ भाषामे अनुसन्धानात्मक कार्य एवं शिक्षण व्यवस्थाहित ।

निवेदक

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

वैदेही समितिसँ प्राप्त

यात्री

रचित

रोचक उपन्यास

नवतुरिआ

मूल्य एक टाका मात्र

छात्र-समुदाय-उपयुक्त

मैथिलीमे आलो-
चनात्मक निबन्ध संग्रह

विवेचना

सम्पादक

श्रीसुधांशु 'शेखर' चौधरी

मूल्य एक टाका मात्र

गल्प-साहित्यक अपूर्व देन

गप्पक फोड़न

प्रो० श्रीहरिमोहनभा,

यात्री आदि

मूल्य चारि आना मात्र